CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

[राजस्थान शासन द्वारा प्रकाशित]

प्रधान-सम्पादक
चन्द्रमोहन मीना
I.A.S.
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

8.1

ग्रन्थाङ्क 179

सङ्गीत-माधवम्

सम्पादक
डॉ. गोविन्दराम चरौरा
एम. ए., एम. फिल्., पी-एच. डी.

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
(राजस्थान राज्य संस्थापित)
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur
1994

मूल्य रु. 29.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला
[राजस्थान शासन द्वारा प्रकाशित]

प्रधान-सम्पादक
चन्द्रमोहन मीना
I.A.S.
[निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर]

ग्रन्थाङ्क 179

सङ्गीत-माधवम्

सम्पादक
डॉ. गोविन्दराम चरौरा
एम. ए., एम. फिल्., पी-एच. डी.

प्रकाशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर
(राजस्थान राज्य संस्थापित)
Rajasthan Oriental Research Institute, Jodhpur.
1994

मूल्य रु. 29.00

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रकाशक
(राजस्थान राज्य संस्थापित)
निदेशक
राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

प्रथम संस्करण : 1994

प्रथमावृत्ति : 500

© प्रकाशक

मूल्य : 29.00

मुद्रक
सिटीजन प्रेस, जोधपुर

विक्रमाब्द 2051 सन् 1994

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निदेशकीय

आध्यात्मिक चिन्तन की भारतीय विचारधारा का सूत्रपात यों तो वेद की ऋचाओं में ही देखा जा सकता है, परन्तु धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के चतुः-स्तम्भों पर आधारित भारतीय समाज में मनुष्य को प्रवृत्ति से निवृत्ति मार्ग की ओर ले जाने का एक निश्चित क्रम है, निश्चित विधान है और इसीलिये जब-जब भी अकाल संन्यास को अंगीकार कर मोक्ष पाने के लिये संगठित या व्यक्ति-गत प्रयत्न हुए, उनका सातत्य संस्कृति की सनातनता के साथ चल नहीं पाया। वर्णाश्रमविरोधी नाथ परम्परा में यद्यपि समाज के सभी उपेक्षित, यहां तक विधर्मियों को भी, स्थान मिलता गया, परन्तु नाथ-साधना की कठोर तपस्या के कारण समाज में वह भी आदृत नहीं हो सकी और मनुष्य मन का झुकाव भक्ति या समर्पण की ओर अधिक होने लगा।

भक्ति के निर्गुण-सगुण विधान सर्वविश्रुत हैं और सगुण उपासकों की रामाश्रयी और कृष्णाश्रयी परम्पराओं के विकास और उनके साहित्य पर पर्याप्त चर्चा-विमर्श हो चुका है। जैसे हिन्दी या उसकी उपभाषाओं में मिलने वाले पदों अथवा वाणियों को किसी निश्चित राग और नामविधान से गाने की कवि की इच्छा बलवती रही है, वैसे ही संस्कृत में भी जयदेव के गीतगोविन्द से संस्कृत के कवियों ने भी अपने काव्य को गेय बनाना प्रारम्भ किया— वह गीतिकाव्य कह-लाया। पिछले सात-आठ सौ वर्षों में इस परम्परा का प्रचुर विकास हुआ है। उसी परम्परा में प्रबोधानन्द सरस्वती ने संगीतमाधव की रचना की।

संगीत-माधव में प्रस्फुटित शृंगारिक भक्ति का आधार रूपगोस्वामी और जीवगोस्वामी की प्रेमाभक्ति ही है फिर भी राधावल्लभ के अलौकिक नित्य विहार को नित्य देखने की भक्त की लालसा ने संगीत-माधव को एक अनूठे रूप में संवार दिया है। और इस दृष्टि से हमारे द्वारा पूर्व में प्रकाशित किये गये संगीत-रघुनन्दन अथवा शंकरी-संगीत से यह अलग ही प्रकार की विशिष्ट रचना है। विभाग के डॉ. गोविन्दराम चरौरा ने इस रचना का साधु-संपादन कर उसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विद्वानों के हाथों सौंपने योग्य बनाया है और 'पुरातन ग्रंथमाला' की श्रीवृद्धि की है। उनका यह प्रयास श्लाघनीय है।

चन्द्रमोहन मीना
आई.ए.एस.

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रास्ताविकम्

प्रेमप्रधानोऽयं वैष्णवोपासनासम्प्रदायो द्वैविध्यं भजमानो वृन्दावनधामोपगतः। तत्रैको भागवतपुराणान्तर्वर्णितश्रीकृष्णलीलावलम्बिचैतन्यसम्प्रदायः, अपरश्च पौराणिकपरम्परानिगडबन्धनविमुक्तोऽपि प्रवर्त्तकप्रेमसुधारसैकदर्शनपरो राधावल्लभीयसम्प्रदायः। तत्र श्रीराधिकामाधवयोरत्यद्भुतां रहःकलां दिदृक्षूणां प्रेमरसाधिदेवतानुचरी-बुभूषताम् कृते सान्द्रप्रेमरसामृतमास्वादयद् रसिकप्रबोधानन्दसरस्वतीवर्णितनित्यविहारमहिमामयं 'सङ्गीतमाधवम्' गीतिकाव्यं राधावल्लभीयसम्प्रदायमेव सम्पुष्णाति। भक्तिरसमयेऽपि सम्प्रदायद्वये उपासनापद्धतिवैलक्षण्यमपि। तयोरेका गौडीयसम्प्रदाये 'कृष्णपद्धतिः', श्रीहितहरिवंशगोस्वामिप्रवर्तितराधाकृष्णयुगलोपासनाप्रकारमयी कृष्णाराध्यैव राधेति द्वितीया राधापद्धतिः। इयमेव राधापद्धतिर्धामानन्यश्रीप्रबोधानन्देन साक्षात्कृतवृन्दावनरस-(प्रेमरस)-रीत्या प्रवाहिता, यत्र नास्ति प्रवृत्तिनिवृत्तिस्वरूपशास्त्रमर्यादाभीतिः।

सङ्गीतमाधवं नित्यविहाररसस्य प्राणभूतं काव्यम्। नित्यविहारस्य तत्त्वचतुष्टयं विद्यते—राधा-कृष्णः-सहचरीगणः-वृन्दावनञ्चेति। नित्यक्रीडयाऽऽनन्दमभिव्यञ्जयन्ती निरतिशयानन्दरूपा पराप्रकृतिस्वरूपा च कृष्णाराध्या नित्यकिशोरी रसमयी राधाऽनादिवस्त्वेव। रसमयकृष्णोऽपि परमैश्वर्यान्तर्लीनः प्रेम्णो माधुर्यस्य च साक्षान्मूर्ती राधया सह नित्यकेलिकलाभिर्युगलरूपायितोऽद्वयं भजते। परात्परशक्तेर्लीलादर्शनेनैव नित्यानन्दमवाप्नुवन् राधोपासको रसिक एव सहचरीगणः। राधामाधवयो रहःकलात्मकक्रीडास्फुरणस्थलम् एव स्वसुखवासनाशून्यत्वादत्यन्तं शुद्धं परिपूर्णञ्च रसमयराधानिकुञ्जवाटी वृन्दावनधाम। तच्च स्वतन्त्रम्, राधामाधवौ च तदधीनाविति दिव्यप्रकाशधाम। तदेव वृन्दावनरस इति।

नित्यविहारदर्शनमेव सहचरीभूतजीवात्मन उपास्यभावः। तच्च प्रेममहारसेनैव। प्रेम्णः सैव स्थितिः श्लाघ्या यस्यां राधाकृष्णौ क्रीडार्थमेव प्रिया-प्रिय-

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तमौ क्षणमपि वियोगमसहमानावपि विरहसदृशातृप्तिमनुभवन्तौ नूतनरसमास्वादयन्तौ च सामीप्यमेवाभिलषतः ।

'रसो वै सः' इति श्रुत्या 'तत्'-पदप्रतिपादितः प्रेमैव रसात्मकः सन्नपि रसस्य नव-नवोपलब्ध्या आनन्दीभवति । निखिलरसामृतमूर्त्तेः भगवतो नित्य-क्रीडापरायणप्रेमैव भक्तिरसाप्लावितानां कृते रसस्वरूपः । काव्यरसाद्भिन्नैवास्य भक्ति-(प्रेम)-रसस्य प्रक्रिया । स तु सामाजिकनिष्ठ एव, न तु अनुकार्यं-(नायक)-निष्ठोऽपि, अयम्पुनः भगवतो रसरूपत्वादुभयनिष्ठः । वृन्दावनात्मिका रतिरेवास्वाद्यमाना रसरूपा, तस्याश्च भगवद्रूपत्वाद् रस एव रसास्वादने प्रवृत्तः। अतो नायं कृत्रिमः । प्रेमायमद्वययुगलस्वरूपः श्यामश्यामात्मकः ।

वृन्दावनरसमाधुरीगायकोऽयं प्रबोधानन्दसरस्वती । अतः 'सङ्गीतमाधवम्' इति गीतिकाव्यम् 'गीतगोविन्द'वद् गीतिकाव्यपरम्परायां वृन्दावनलालसमानसानां रसिकानामवश्यगेयम् । राधावल्लभीयसम्प्रदाये संस्कृतसाहित्यस्य परिमितोपलब्धित्वेऽपि 'सङ्गीतमाधवम्' इति काव्यग्रन्थरत्नं नूनं साङ्गोपाङ्गवर्णने परिपूर्णम् । ग्रन्थेऽस्मिन् पदे पदे तलस्पर्शि-अद्भुतप्रेमरसस्याभिव्यक्तिः स्फुटभाभातीति ज्ञास्यन्ति रसिकजनाः ग्रन्थाध्ययनेन । तथाहि—

विना प्राणान् देहः कथमिह भवेत् को नु सलिलं
विना मीनश्चन्द्रो विलसति विना को नु रजनीम् ।
विनान्नं का प्राणस्थितिरहह कृष्णोपि नितरां
विना राधां प्रेमोन्मदमदनलीलारसनिधिम् ।।7/82।।

राजस्थानप्राच्यविद्याप्रतिष्ठानम् एतादृशदुर्लभपाण्डुलिपीनां सङ्ग्रहेण प्रकाशनेन च संस्कृतसाहित्यस्यानवरतं श्रीवृद्ध्यै साधनारतमिति प्रहर्षः । तत्रैव गवेषकपदमधितिष्ठन् ग्रन्थस्यास्य सम्पादको डाक्टर-गोविन्दराम चरौराः सम्पादनकर्मणि कुशलो व्युत्पन्नः स्वाध्यायनिरतो नितरां परिश्रमी च । इतः पूर्वमनेन 'रामगीतम्' इति गीतिकाव्यं समीक्ष्य सम्पाद्य च विदुषां समक्षम् प्राकाश्यमानीतम् । तस्यामेव गीतिकाव्यपरम्परायामस्य द्वितीयोऽयं श्लाघनीयः प्रयासः । महता श्रमेण राधावल्लभसम्प्रदायस्य ग्रन्थकर्त्तुः, ग्रन्थस्य च विषये यावच्छक्यं प्रमाणपुरस्सरं सामग्री भूमिकायां प्रत्ता । पाण्डुलिपिश्च विवेकपूर्वकं संशोधिता, येनस्या

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ग्रन्थस्य निश्चप्रचमेव श्रीरभिवृद्धिं गता। डाक्टर-गोविन्दरामस्य लेखनी सारस्वत-साधनायामेवमेव सम्प्रवर्त्ततामिति मङ्गलमयान् उन्नतिहेतुकान् कामये। राजस्थानप्राच्यविद्याप्रतिष्ठानस्यानेन प्रकाशनेन रसिकाः वृन्दावनरसमास्वाद्य कृतकृत्याः भविष्यन्तीति शुभाशंसमानः

शरत्पूर्णिमा
संवत् २०५०

श्रीकृष्णशर्मा
एम. ए., एम. फिल्., पी-एच. डी.
न्यायाचार्यः, व्याकरणाचार्यः
सहाचार्यः
जयनारायणव्यासविश्वविद्यालयीय-
संस्कृतविभागे, जोधपुरम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुक्रम

1. निदेशकीय — iii
2. प्रास्ताविकम् — v
3. भूमिका — 1-16
4. सङ्गीतमाधवम् : सम्पादित-पाठः — 1-61
   - वृन्दावनोत्सवो नाम प्रथमः सर्गः — 1-7
   - राधामाधवमहोत्सवो नाम द्वितीयः सर्गः — 7-13
   - राधादास्यमहोत्सवो नाम तृतीयः सर्गः — 13-19
   - राधागोविन्दमिथो दर्शनोत्सवो नाम चतुर्थः सर्गः — 19-23
   - राधासख्यनुनयो नाम पञ्चमः सर्गः — 24-27
   - चतुरराधेशो नाम षष्ठः सर्गः — 28-32
   - मुग्धमाधवो नाम सप्तमः सर्गः — 32-35
   - रसोद्धतमाधवो नामाष्टमः सर्गः — 35-39
   - मुदितराधामाधवो नाम नवमः सर्गः — 40-42
   - उत्तरलमाधवो नाम दशमः सर्गः — 42-46
   - विह्वलराधिको नामैकादशः सर्गः — 46-48
   - रासविलासो नाम द्वादशः सर्गः — 49-52
   - विधुरमाधवो नाम त्रयोदशः सर्गः — 52-54
   - राधामाधवविलासो नाम चतुर्दशः सर्गः — 55-57
   - निजोल्लासवर्णनं नाम पञ्चदशः सर्गः — 57-61
5. परिशिष्ट-1
   - पद्यानुक्रमणिका — 1-6
6. परिशिष्ट-2
   - गीत्यनुक्रमणिका — 7-8
7. परिशिष्ट-3
   - प्रयुक्तछन्दानुक्रम — 9-10

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

भूमिका

प्रबोधानन्द सरस्वती-जीवनवृत्त

अव्यक्तादीनि भूतानि व्यक्तमध्यानि भारत ।
अव्यक्तनिधनान्येव तत्र का परिदेवना ॥

सृष्टि प्रक्रियामें प्राणियों का आरम्भ दिखाई नहीं देता है। बीच का अस्तित्व प्रकट ता है। उनका अन्त भी अव्यक्त है। उसमें शोक कैसा? भगवान् श्रीकृष्ण ने प्राणि- त् के जन्म और मृत्यु के मध्य वर्तमान अस्तित्व को व्यक्त बताया है। कहां से ता है और कहां जाता है—यह अव्यक्त है। स्वानुभूत सत्य को देववाणी की स शब्दावली में संजोने वाले अधिकांश साहित्यकार इस भगवदुक्ति के अनुगामी वा दो सोपान आगे हैं। ये अपने जन्म, कुल, शिक्षा-दीक्षा आदि के विषय में प्राय: सीन रहे हैं। इनकी कालजयी कृतियां इनके प्रजापतित्व को ध्वनित करती यी हैं। अपार काव्यसंसार का एकमात्र प्रजापति कवि भी अन्य प्राणियों तुल्य उस विश्वस्रष्टा प्रजापति की ही कृति है। परन्तु कवि की विलक्षण भुत प्रतिभा उसको साधारण से साधारणेतर बना देती है। किसी विलक्षण क्तित्व को साङ्गोपाङ्ग नहीं तो अधिकांश जानने का प्रबुद्ध मानव का कुतूहल भाव सिद्ध है।

भक्ति एवं शृंगार के मिश्रण की अनूठी रचना संगीतमाधवम् के प्रणेता ोधानन्द सरस्वती भी इसी प्रकार एक विलक्षण प्रतिभासम्पन्न—अनुभवगम्य च पथ के पथिक हैं। इन्होंने भी देववाणी के अन्य साधकों की तरह अपने विषय भगवदुक्ति को ही विस्मृत नहीं होने दिया है। अन्त:साक्ष्य के रूप में जन्म, वार, शिक्षा-दीक्षा आदि के विषय में इनकी कृतियों में इन्होंने किंचित् भी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

उल्लेख नहीं किया है। अलबत्ता जो कतिपय समसामयिक साक्ष्य उप होते हैं उन्हें विभिन्न धार्मिक सम्प्रदायों की खींचतान ने संदेहास्पद दिया है।

प्रबोधानन्द सरस्वती की उपलब्ध रचनाओं के अनुशीलन के आधार तीन बिन्दुओं पर दृष्टि केन्द्रित होती है—(1) चैतन्य सम्प्रदाय सम्बन्धी र (2) राधावल्लभ सम्प्रदाय सम्बन्धी रचना एवं (3) वेदान्त विषयक रचना।

चैतन्यचन्द्रामृत प्रबोधानन्द सरस्वती का एक सुन्दर काव्यग्रन्थ प्र है। श्री चैतन्य के प्रति ऐकान्तिक निष्ठा और असीम अनुराग इस ग्रन्थ के प्र छन्द से ध्वनित होता है। जीवगोस्वामी के नाम से प्रचलित वैष्णव वन्दना में इन्हें चन्द्रामृत का कर्त्ता बताया गया है—

प्रबोधानन्द सरस्वतीं वन्दे विमलां यया मुदा ।
चन्द्रामृतं रचितं यत् शिष्यो गोपालभट्टः ।।

चैतन्यचन्द्रामृत के अनुशीलन से ज्ञात होता है कि चैतन्यचरणाश्रयप्र के पूर्व प्रबोधानन्द मायावादी थे।[1]

थियोडर आफ्रेट ने प्रबोधानन्द सरस्वती की रचनाओं में 'विवेकशत नाम की रचना का उल्लेख किया है तथा इसे वेदान्त विषयक रचना बताया है

संगीतमाधवम्, हिताष्टक एवं वृन्दावन महिमामृत नाम से लिखित वृन्दा शतक प्रबोधानन्द सरस्वती की ही रचनाएँ हैं। प्रकृत ग्रन्थों के अनुशील आधार पर प्रबोधानन्द सरस्वती पर राधावल्लभ सम्प्रदाय एवं उसके संस्थ आचार्य हितहरिवंश गोस्वामी (संवत् 1559–1609) का प्रभाव स्पष्ट परिल होता है। हिताष्टक हितहरिवंश गोस्वामी की स्तुति में लिखा गया राधावल्लभीय होने के कतिपय अन्य समसामयिक प्रमाण भी उपलब्ध हैं।

हरिराम व्यास प्रबोधानन्द सरस्वती के समकालीन थे। साधुनि स्तुति में उन्होंने प्रबोधानन्द की प्रशंसा में एक पद्य लिखा है—

1. चैतन्यचन्द्रामृत श्लोक—19, 32, 42

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रबोधानन्द से कवि थोरे।
जिन राधावल्लभ की लीलारस में सब रस घोरे,
केवल प्रेम विलास ग्रास करि भव बन्धन दृढ़ तोरे।

सम्प्रदाय की परम्परा में हरिराम व्यास को भक्त अनन्य तथा प्रबोधानन्द जी को धाम अनन्य माना जाता है 'धाम अनन्य प्रबोध जू'।

कृष्णचन्द गोस्वामी जो हितहरिवंश के पुत्र थे— का कर्णानन्द नामक ग्रन्थ है यह ग्रन्थ संवत् 1635 में पूर्ण हुआ। इसकी टीका के सम्बन्ध में ग्रन्थकार ने लिखा है कि इसकी टीका प्रारम्भ तो मैंने की परं उसको पूरा प्रबोधानन्दजी ने किया।

कर्णानन्दाभिधो ग्रन्थः कृष्णदासेन निर्मितः।
तट्टीका च तदारब्धा श्रीप्रबोधेन पूरिता।

डॉ. विजयेन्द्र स्नातक एवं ललिताचरण गोस्वामी ने स्वकीय ग्रन्थों में प्रबोधानन्द का परिचय भगवद् मुदित कृत रसिक अनन्यमाल के आधार पर प्रस्तुत किया है। रसिक अनन्यमाल 207 पद्यों का ग्रन्थ है जिसमें राधावल्लभ सम्प्रदाय के महात्माओं के जीवन वृत्त हैं।

प्रबोधानन्द सरस्वती संवत् 1595 के लगभग वृन्दावन आये। भगवद् मुदित ने प्रबोधानन्दजी का चरित्र उनके वृन्दावन आगमन से प्रारम्भ किया है। उनका पूर्व वृत्त इतना ही दिया है कि वे संन्यासी थे और काशी से वृन्दावन आये थे। वे सब दिशाओं को जीतकर आये तथा द्वितीय सरस्वती माने जाते थे एवं महापण्डित होते हुए भी बड़े अविनीत थे।

प्रबोधानन्द हुते सन्यासी जाके गुरुमत शून्य उदासी।
दुतिय सरस्वती सब दिसि जीती, पण्डित बड़े बड़े अविनीती।
काशी तें वृन्दावन आये, एक मास रहि अति सुख पाये।

वृन्दावन के मन्दिरों में दर्शन कर आचार्यों से मिलकर भी इनका मन वहां जमा नहीं।[1]

---

1. सबही ठाकुरद्वारे देखे और सबै आचारज पेखे।
सबके मत नीके करि जाने, पै प्रबोध के मन नहिं आने।
—भगवद्मुदितकृत—रसिक अनन्य माल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वृन्दावन से मथुरा आ गये। वहां उनका परिचय परमानन्द नामक महात्मा से हुआ और वे एक दिन अत्यन्त प्रेम विह्वल स्थिति में परमानन्द जी देखकर उनके इस रूप पर मुग्ध हो गये। उन्होंने परमानन्द जी से इस प्रेम वि स्थिति तक पहुंचने का उपाय जानना चाहा।[1] परमानन्दजी ने बताया कि भ की यह पद्धति श्रीहितहरिवंश की है जो वृन्दावन में रसमार्ग के नाम से सुपरि है। शास्त्र मर्यादा में विश्वास रखने वाले प्रकांड पण्डित प्रबोधानन्द हितहरिवंश के पास आये और गोस्वामी हरिवंश से रस चर्चा सुनकर इसकी सरसता पर मु होकर उसमें लीन हो गये।[2]

प्रबोधानन्द सरस्वती संस्कृत भाषा के धुरन्धर पण्डित और रससिद्ध क थे यह बात प्रसिद्ध है। उपर्युक्त विवेचनोपरान्त यह तथ्य सामने आता है वृन्दावन आगमन से पूर्व उन्होंने भक्ति साधना की अनेकानेक दुर्गम घाटियों पार किया था। कर्मकाण्ड की जटिलताओं से भी उनका साक्षात् परिचय थ इस सब के बावजूद भक्ति की सरसता में सराबोर होने के लिए कोई न क आकर्षण उन्हें वृन्दावन में ही मिला। हालांकि उनकी रसमार्ग में प्रवृत्ति

1. परमानन्द रसिक कहुं मिलै चर्चा करत दुहूं मन खिलै।
नित्यविहार की चर्चा ठानी सो प्रबोध के मन नहीं आनी।
स्तुति स्मृति इतिहास सुनाए सनक संहिता के मत गाये।
आगमं वामन बृहत्पुरान इन्हीं आदि कहै बहुत प्रमान।
तापै मानसरोवर कह्यौ नित्य विहार रसिकजन लह्यौ।
सुनकर मानसरोवर रीति श्रद्धा भई करी कछु प्रीति।
तब प्रबोध के मन कछु आई रैन सरोवर बसै जु जाई।

—भगवद्मुदित कृत रसिक अनन्यमा

2. परमानन्द प्रबोध हित कही सो विनती हित जू मन गही।
ये संन्यासी हम हैं गेही मन की भाव धरौ जू सनेही।
सेवन करि परतीति बढाई नित्य विहार की शिक्षा पाई।
अस्तुति अष्टक करि शुद्ध करी चित्तवृत्ति हरिचरननि धरी।
सुन करुना करि रीति बताई अभिलाषा पुजई मन आई।

—भगवद्मुदित कृत रसिक अनन्यमा

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निमित्त अभी भी विवादास्पद है फिर भी प्रामाणिक तौर पर यह कहा जा सकता है कि प्रबोधानन्द पर हितहरिवंश का स्पष्ट प्रभाव है—जो उनकी रचनाओं से अनुभूत किया जा सकता है।

प्रबोधानन्द सरस्वती का कृतित्व

थियोडोर आफ्रेट ने अपने केटलॉगस केटलॉगोरम में प्रबोधानन्द सरस्वती के चार ग्रन्थों का उल्लेख किया है—

(1) चैतन्यचन्द्रामृत
(2) विवेकशतक
(3) वृन्दावनशतक
(4) संगीतमाधव

इनके अतिरिक्त इनकी दो कृतियां और प्राप्त होती हैं— हिताष्टक तथा दूसरी निकुंजविलासस्तव। उपर्युक्त ग्रन्थों का परिचय यहां संक्षेप में प्रस्तुत किया जा रहा है।

(1) चैतन्यचन्द्रामृत—यह एक सुन्दर काव्य ग्रन्थ है। इसमें 143 पद्य हैं। श्री चैतन्य के प्रति ऐकान्तिक निष्ठा और असीम अनुराग इस ग्रन्थ के प्रत्येक पद्य से व्यक्त होता है। आनन्दिन् ने इस ग्रन्थ पर टीका भी लिखी है। यह ग्रन्थ बहरामपुर राधारमन प्रेस से सन् 1927 में छप चुका है [1] मुदानन्दसूरि ने भी उक्त ग्रन्थ पर

1. S. K. De, Bengal's contribution to sanskrit literature and studies in Bengal vaisnvism, Page, 103

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रसिकवादिनी टीका लिखी है। इसकी एक हस्तलिखित प्रति राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर संग्रह में भी उपलब्ध है। उक्त ग्रन्थ से चैतन्य प्रभु की भावपूर्ण स्तुति का एक पद्य प्रस्तुत है—

कैवल्यं नरकायते त्रिदशपूराकाशपुष्पायते,
दुर्दान्तेंद्रियकालसर्पपटली प्रोत्वातदंष्ट्रायते ।
विश्वं पूर्णसुखायते विधिमहेन्द्रादिश्च कीटायते,
यत्कारुण्यकटाक्षवैभववतां तं गौरमेव स्तुमः ।।5।।

(2) वृन्दावनशतकम्—प्रबोधानन्द सरस्वती ने वृन्दावनमहिमामृत नाम से वृदावन शतक लिखे हैं। एक अनुश्रुति के अनुसार इन्होंने वृन्दावन महिमा का गान करने के लिए सौ शतकों का प्रणयन किया। परन्तु सौ शतक अभी उपलब्ध नहीं हैं। डॉ. विजयेन्द्र स्नातक[1] उनमें से अठारह शतकों को देखने की पुष्टि करते हैं। ललिताचरण गोस्वामी[2] सत्रह शतकों की उपलब्धि को पुष्ट करते हैं। इन सत्रह शतकों का प्रकाशन यामिनी मोहनसेन और भगवानदास बाबाजी ने वृन्दावन से बंगला भाषान्तर सहित सन् 1933 से 1937 के बीच कराया था।[3]

वृन्दावन के पार्थिव अपार्थिव स्वरूप को प्रस्तुत करने वाले इस ग्रन्थ में भक्त की वृन्दावन भावना को व्यापक रूप से प्रस्तुत किया गया है। वृन्दावन महिमागान का एक उदाहरण डॉ. स्नातक की पुस्तक से साभार प्रस्तुत किया जा रहा है जिसमें—प्रबोधानन्दजी ने स्वयं शेषनाग को भी वृन्दावन महिमामृत रूपी समुद्र के पार जाने में असमर्थ बताया है। अन्य साधारण जन की बात ही क्या है—

शेषोऽपि अस्य महिमामृतवारिराशेः
पारं प्रयातुमनलम्बत तत्र केऽन्ये ।
किन्त्वल्पमप्यहमति प्रणयाद् विगाह्य
स्यां धन्य धन्य इति मे संमुपक्रमोऽयम् ।।
—वृन्दावनमहिमामृत, प्रथमशतक श्लोक 2

1. राधावल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धांत और साहित्य
द्वितीय संस्करण, पृष्ठ, 217

2. श्रीहितहरिवंश गोस्वामी : सम्प्रदाय और साहित्य
प्रथम संस्करण, पृष्ठ-563

3. वही

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रबोधानन्दजी की कीर्तिपताका फहराने वाले इस ग्रन्थ की दो हस्त-लिखित प्रतियां राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर संग्रह में उपलब्ध हैं। प्रतिष्ठान की प्रति से वृन्दावन महिमा का एक शिखरिणी छन्द उद्धृत है—

इह भ्रामं भ्रामं जगति नहि गंधोपि कलितो
यदीयस्तत्रैवाखिलनिगमदुर्लक्ष्यसरणौ ।
अपारे श्रीवृन्दावनमहिमपीयूषजलधौ
महाश्चर्योन्मीलन्मधुरिमणिचित्तं लगतु मे ।।5।।

हिताष्टक—इसमें हितहरिवंश गोस्वामी की स्तुति में लिखे आठ पद्य हैं। गोस्वामी सुखलाल ने अठारहवीं शती में इस पर संस्कृत में टीका[1] भी लिखी थी इसकी एक प्रति राजस्थान प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर के हस्तलिखित संग्रह में उपलब्ध है। प्रथम पद्य इस प्रकार है—

त्वमसि हितहरिवंश श्यामचंद्रस्य वंश,
परमरसदनादैर्मोहिताशेषविश्वः ।
अनुपमगुणरत्नैर्निर्मितोऽसि द्विजेन्द्र,
मम हृदि तव गाथाश्चित्रलेखेव लग्नाः ।।

'विवेकशतकम्' की प्रति उपलब्ध नहीं होने से इसके प्रतिपाद्य पर प्रकाश डालना सम्भव नहीं है। आफ्रेट ने इसेवेदान्त का ग्रन्थ उल्लिखित किया है। ललिताचरण गोस्वामी निकुञ्जविलासस्तव को प्रबोधानन्द सरस्वती कृत बताते हैं तथा इसकी प्रति वृन्दावन में राधावल्लभीय गोस्वामी ब्रजवल्लभलाल के पास उपलब्ध बताते हैं।[2]

1. श्रीहितहरिवंश गोस्वामी : सम्प्रदाय और साहित्य
पृष्ठ, 561 पर पादटिप्पणी

2. श्रीहितहरिवंश गोस्वामी : सम्प्रदाय और साहित्य
पृष्ठ-574

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सङ्गीतमाधवम् का परिचय

'संगीतमाधवम्' पन्द्रह सर्गों में ग्रथित शृंगारिक भक्ति की अनुपम रचना है। यह जयदेवप्रणीत गीतगोविन्द की सरणि में तत्तत् इष्टदेवों का अवलम्बन कर लिखे गये सरस काव्यों में महत्वपूर्ण स्थान रखता है।

जयदेवप्रणीत गीतगोविन्द के पश्चात् अपने आराध्य युगल के प्रति अपनी माधुर्य भक्ति के प्रकटीकरण का जो सिलसिला चालू हुआ वह आज भी रसिक कविपुङ्गवों को आन्दोलित कर रहा है। संगीतमाधवम् की शिल्प-योजना का आदर्श भी गीतगोविन्द ही है। संगीतमाधवम् के स्रष्टा प्रबोधानन्दजी ने अपनी इस विलक्षण, सरस कृति रूपी मुग्धा को विविध मनोहारी अलंकारों से अलंकृत कर उसमें अनिर्वचनीय दिव्य प्रेम की संसृष्टि करके रसिकजनों को आलिङ्गन करने हेतु एक अलौकिक उपहार रूप में भेंट किया है—

अलङ्कुर्युरलङ्कारैः प्रेम्णा दद्युर्मनः क्वचित् ।
कण्ठे कुर्वन्तु रसिका कृतिं मुग्धामिमां मम ॥

प्रबोधानन्दजी का अपनी कृति को मुग्धा घोषित करना कोई अध्यवसाय की सिद्धि नहीं। उनका अपनी आराध्या राधा के लिए किशोरी, गौरी, कैशोरसार मधुर मधुरधामयुगल आदि विशेषणों का प्रयोग उनके संकल्प की पुष्टि है। पुष्प चयन के व्याज से सखियों के निकल जाने पर कामोद्दीपक कानन (वृन्दाविपिन) की शोभा को निहारने के लिए प्रविष्ट हुए कृष्ण को तरुतल में स्थित चकितलोचना राधा टकटकी लगाकर देखती है। सखियों को ढूंढना और पुष्पोच्चय तो बहाना ही है—

प्रसूनचयनच्छलादथ सखीजनैर्निर्गता,
विवेश हरिमीक्षितुं मदनजीवनं काननम् ।
प्रियं परिविचिन्वती किमपि पुष्पकं चिन्वती,
चिरं चकितलोचना तरुतले च बभ्राम सा ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रूप-लावण्य की सीमा काश्मीरगौरी की एक झलक किस रसिक को रोमाञ्चित नहीं कर देगी और यदि वह उसका प्रियतम है तो उसकी क्या हालत बनती है, यह देख लीजिये—

ततो रूपलावण्यसीमां किशोरीं,
सुदूरे समालोक्य काश्मीरगौरीम् ।
स्खलद्बर्हमौलिर्गलत्पीतवासाः.
करभ्रष्टवेणुः पपाताप्तमूर्च्छः ॥

'ध्वनि प्रतिष्ठापक परमाचार्य मम्मट ने 'स्फुटो न कश्चिदलङ्कारः रसस्य च प्राधान्यान्नालङ्कारता', कह कर अलङ्कार की गौणता तथा रस की प्रधानता सिद्ध की। स्फुट अलंकार रहित किन्तु रसोपेत कृति में काव्यत्व की हानि नहीं है। प्रबोधानन्दजी ने इस तथ्य के आलोक में ही अपनी रस-निर्भर इस ललित कृति के विषय में कहा है कि यदि द्विजिह्वा शब्दगत अथवा अर्थगत दोष रूपी जहर से इस अतिशुभ कृति को नष्ट कर भी देंगे तो परमरसद-राधिका-केलि-सिन्धु में अवगाहन करने वाले अपनी स्तुति रूपी अमृत से इसे पुनरुज्जीवित कर देंगे—

तत्तद्दोषप्रबलगरलैरर्थतः शब्दतो वा,
कामं नष्टां कृतिमतिशुभां कुर्वतां ये द्विजिह्वाः ।
गाढं मग्नाः परमरसदे राधिकाकेलिसिन्धौ,
जातस्नेहाः स्तुतिभिरमृतैर्जीवयिष्यन्ति भूयः ॥

काव्य में रस की सत्ता सर्वमान्य है। इसीलिए प्रबोधानन्दजी अपनी कृति के अस्तित्व के प्रति आश्वस्त ही नहीं पूर्ण आश्वस्त हैं क्योंकि— रसे सारश्चमत्कारः सर्वत्रानुभूयते।'

प्रबोधानन्दजी ने अपनी इस अनुपम काव्यकृति को राधिकामाधव के चरण-कमलों में समर्पित किया है। इस समर्पण से वे युगल की एकान्त अद्भुत केलिक्रीडा दर्शन के अभिलाषी हैं। उनका यह अभिलाष ही काव्यप्रणयन का प्रयोजन बन गया और संभवतः यही मम्मट का सकलप्रयोजनमौलिभूत, समनन्तरमेव रसास्वादन समुद्भूत विगलित वेद्यान्तर आनन्द है —

श्रीराधिकामाधवयोः पदाम्बुजे,
निर्माय यत्काव्यमिदं मयार्पितम् ।
तेनैव तौ प्रीतहृदौ कदापि मां,
अत्यद्भुतां दर्शयतो रहःकलाम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रबोधानन्दजी वराङ्गनादि विषयों को दूर से ही नमस्कार करते हैं, कर्मादि मार्ग उनके लिए व्यर्थ हैं, साधनापरक भक्ति भी उन्हें रुचिकर नहीं, तिक्ततर मुक्ति पर वे थूकते हैं। वृन्दावनेन्द्र माधव और राधिका की अनुचरी होना ही उनको अभीष्ट है :—

दूरान्मुञ्च वराङ्गनादिविषयान् कर्मादिमार्गे वृथा,
खेदं न प्रथयेन्द्रजालसदृशीर्विद्धीह सिद्धीरपि ।
मुक्तिं तिक्ततरां च थूत्कुरु परं वृन्दावनेन्द्रं भज,
श्रीराधानुचरी भवंस्तु कलयेस्तत्रापि कञ्चिद्रसम् ॥

संगीतमाधवम् में जिस रीति से माधुर्यभक्ति का प्रतिपादन किया है वह राधावल्लभ सम्प्रदाय की भक्ति है। इस सम्प्रदाय में रसोपासना है अर्थात् राधा कृष्ण के नित्य विहार की स्थिति में जो अनिर्वचनीय आनन्द उत्पन्न होता है इसी को रस संज्ञा से अभिहित किया जाता है और यही प्रेम की आस्वाद्य स्थिति का रूप है। ब्रह्म और जीव की एकता प्रतिपादित करने के लिए यहां प्रेमदशा को ही ऐक्य-भावना का स्रष्टा कहा जाता है। यहाँ न मुक्ति की कामना है और न साधनापरक भक्ति मार्ग का कोई विधान। यहां तो नित्यविहार दर्शन ही सहचरी (जीवात्मा) का उपास्य है। इसकी प्राप्ति प्रेम तत्व से होती है। इस प्रेम दशा में पहुंचने के लिए सहचरी रूप जीवात्मा को राधानुचरी बनकर उसके महल में सेवा परिचर्या कर निकुंज लीलादर्शनाधिकार प्राप्त करना होता है। नित्यविहार के चार तत्व—राधा, कृष्ण, सहचरी (समाज), वृन्दावन (धाम) हैं। इनमें यह प्रेम तत्व ही समान रूपेण अनुस्यूत है। यही विहार भावना का पोषक है।

प्रबोधानन्दजी ने नित्यविहार का वर्णन करते हुए रसमूर्ति ललितकिशोरी राधा एवं कृष्ण के प्रेम को आस्वाद्य स्थिति में पहुंचाया है। वृन्दावन महिमा, रसिकद्वन्द्व का वृन्दावन नव कुञ्जगृहों में मनोहारो केलिविलास कृष्ण से स्वप्रिया राधा के पादारविन्दों की किङ्करी होने की याचना, प्रेम के आस्वाद्य होने की पूर्व भूमिका है। न तो प्रेम में लोक लाज है, न ही कुल शील, न ही ख्याति रक्षा की अपेक्षा। यदि अपेक्षा है तो मात्र राधिका के कुटिल कटाक्षों की। प्रेम में स्वत्व विगलित हो जाता है। प्रेय के प्रति सम्पूर्ण समर्पण होता है। फिर वहां बहुतर रूक्ष वचन, शोण दृष्टि विलोकन, अवज्ञा, चरण प्रहार गणनीय नहीं होते यहां तो सहचरी और उपास्य के बीच का पर्दा हट जाता है और रह जाता है— ऐक्य—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वद बहुतररूक्षं पश्य मां शोणदृष्ट्या,
कुरु चरणप्रहारं गच्छ वाचावहेलम् ।
प्रमदमदनमाद्यन्मुग्धबाह्यान्तरात्मा,
न खलु न खलु कृष्णो राधिके त्वां जहाति ।।

मलय पवन और चन्द्रमा का शैत्य, कालिन्दी कमलों की सुगन्ध, लोलत्पल्लविनी भ्रमरों का मधुर गुञ्जार आदि कृष्ण के राधिका-प्रेम को और उद्दीप्त करते हैं। फिर कृष्ण को सम्मुख पीछे इधर उधर, ऊपर-नीचे, वृक्षों में किंवा स्वयं में राधा ही दिखती है। और तो और, यह समस्त भुवन ही राधामय प्रतीत होता है। जड़-चेतन का अन्तर फिर गौण हो जाता है—

पुरो राधा पश्चादपि च राधा तत इतः,
स्फुरन्त्येषा सम्यग्वसति मम राधान्तरगता ।
अधश्चोर्ध्वं राधा विटपिषु च राधा किमपरं,
समस्तं मे राधामयमिदमहो भाति भुवनम् ।

प्रणयोन्मत्तता की यही पराकाष्ठा होती है। विना प्राणों के देह का, विना सलिल के मीन का, विना रजनी के चन्द्र का, विना अन्न के प्राण का अस्तित्व असम्भव है। उसी प्रकार प्रेमोन्मद मदनलीला-रसनिधि राधा के विना कृष्ण का अस्तित्व भी किस काम का—

विना प्राणान् देहः कथमिह भवेत् को नु सलिलं
विना मीनश्चन्द्रो विलसति विना को नु रजनीम् ।
विनान्नं का प्राणस्थितिरहह कृष्णोऽपि नितरां
विना राधां प्रेमोन्मदमदनलीला रसनिधिम् ।।

प्रेम में नैरन्तर्य है। स्नान, शयन, भोजन गमन सब निरन्तर चलना है—
'स्नानशयनभोजनगमनादिषु विहर मया त्वमुदारा ।

इस विचित्र रति में नखक्षत, कुचमर्दन, चुम्बन, आलिङ्गन नीवी-उत्कर्षण' प्रेमोत्कर्ष हैं—

हृत्वा कञ्चुकमौक्तिकं खरनखैः कस्याश्चिदुच्चस्तनं
चुम्बन् कामपि संष्वजन्नपि परां नीवीपरस्याहरन् ।
नीत्वैकामपि मण्डलाद्बहिरहो तन्वन् विचित्रां रतिं
राधासौ रतउन्मदो विजयते रासे रसज्ञो हरिः ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रेमभाव के आस्वाद्य होने के लिए वियोगावस्था की सृष्टि आवश्यक है। सुख का अनुभव दुःख ताप के बिना हो नहीं पाता— सुखं हि दुखान्यनुभूय शोभते। यहां सङ्केतकुञ्ज में पल भर दिखाई नहीं देना राधा की विह्वलता का कारण बन जाता है। वह क्षण भर भी प्रतीक्षा नहीं कर सकती, एक क्षण में बाहर और अगले ही क्षण अन्दर। फिर तो वस्त्रों की भी सुध-बुध नहीं। करुण विलाप इतना कि नेत्र जल से लताओं का ही नहीं वृक्षों का भी सेचन हो रहा है। मूर्च्छित होती है, वलय, मणिमय हार को तोड़ देती है सुहाता कुछ नहीं। और तो और, पशु-पक्षी भी रोने लग जाते हैं, वृक्षों का विकास रुक जाता है। शरद का विमल चन्द्रमा मलिन हो जाता है, सहज शीतल पवन भी प्रवाहित नहीं होता है। राधा के क्षण भर के विरह की कातरता प्रकृति को भी विकल कर देती है— यही है प्रेमभाव को दिव्यता, अलौकिकता—

रुदन्ति मृगपक्षिणो न विकसन्ति वल्लिद्रुमाः
शरद्विमलचन्द्रमा मलिनभावमालम्बते।
वहन्ति न समीरणाः सहजशीतलामोदिनः
क्षणाद्विरहकातरे नवरसप्रदे धामनि ॥

एक क्षण का विरह, तुरन्त माधव उपस्थित। पुनः वही आलिंगन, चुम्बन रमणीय रमण—

सहसा समुपेत्य माधवस्तत उद्वेल इवामृताम्बुधिः
परिरम्भणचुम्बनादिना रमणीयं रमयाम्बभूव सः।

इतना ही नहीं यह केलिविलास विलक्षण एवं दिव्य है। निमेष मात्र का वियोग भी अनन्त लगता है। लुकाछिपी से ही इसकी सृष्टि हो जाती है—

अथोत्थितायां ललितं हसन्त्यां,
लतान्तरे माधवजीवितायाम्।
निमेषमात्रं कलयन्ननंतं,
कल्पं हरिर्व्याकुल एवमूचे ॥

पलभर के बिछोह के अनन्तर पुनः मिलन का द्विगुणित उत्साह प्रेम में नूतनता को उत्पन्न करता है, और युगल प्रेम का परिपाक भी करता है। प्रेम का यही रूप प्रीतिकर माना गया है—

क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ऊपर से यह कृति शृङ्गार की अवश्य दिखाई देती है लेकिन गहराई से ने पर वास्तविकता कुछ अलग ही है। इस दिव्यप्रेम दशा के निरूपण से सहचरी ीवात्मा) एवं ब्रह्म के एकत्व का दर्शन होता है। जीवात्मा का यह लौकिकत्व ततः अलौकिकत्व में परिणत हो जाता है। इस दिव्य प्रतिज्ञा को प्रबोधानन्द जी प्रत्येक गीति के अन्त में दोहराया है।

इस प्रकार यह एक माधुर्योपासना की कृति है। प्रबोधानन्दसरस्वती ने ोलिए गीतियों के अन्त में स्वयं को रसिकसरस्वती, मधुरसरस्वती आदि विशे-- ों से विशेषित किया है। प्रबोधानन्दजी ने अपने कोमल कोमल भावों को सरस, लत एवं कोमल पदावली में ही पिरोया है। रस की स्रोतस्विनी सङ्गीत को झंरिणी इस मुग्धा कृति में अलंकारों की रुनक-झुनक इसके लावण्य को निखार ो हैं। जैसे भाव वैसी ही पदशय्या एव वर्णविन्यास। सर्वत्र प्रसाद और माधुर्य ों का विस्तार है।

इसमें 29 अष्टपदियां तथा 139 श्लोक हैं। अष्टपदियां ही नहीं अपितु ाक भी प्रसाद गुण सम्पन्न छोटे-छोटे पदों से संवलित हैं, अतएव साधारण-जन भी हृदयङ्गम कराने में सहायक हैं। लयात्मकता तो इनसे स्वतः ही प्रस्फुटित पड़ती है। वाक्यावलि का लालित्य भी दर्शनीय है—

देहि विवृत्य कृपामृतदृष्टिम्।
शमय मम स्मरशरशिखिवृष्टिम्।
राधे व्रजपतिनन्दकुमारम्।
परिचिनु मामधिगतरससारम्।
दर्शय हास्यमनोहरमास्यम्।
वितर सुधाकरकोटिषु हास्यम्।
त्वयि रुचिदायिनि सुचिरधृताशम्।
किमपि समादिश निजपददास्यम्।
तव कुचपरिरम्भणरसलोलम्।
मामवलोकय गलितनिचोलम्।
निजकरगतताम्बूलमखण्डम्।
वितर कृपा यदि विकसितगण्डम्।
अभयमलज्जमनङ्कुशचेष्टम्।
कथमिव पश्यसि मम न कृतेष्टम्।
भवतु ममाद्य शुभा रजनीयम्।
तनु तव रतिसुखमनुभवनीयम्।
इति रससारसरस्वतिगीतम्।
रचयतु हरिपदरसमुपनीतम्।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अनुप्रास की मोहक छटा ने काव्यसौन्दर्य को संवारा है। साहित्यदर्पणकार विश्वनाथ कविराज ने जिस अन्ततुक को अन्त्यानुप्रास नाम से स्वीकारा है, प्रबोधानन्दजी ने उसका प्रयोग बड़े चाव से किया है। तुक अन्त में ही नहीं मध्य में भी है। इसके आनन्द का आस्वादन भी कर लीजिये—

निपतति चरणे गुञ्जाभरणे गोकुलराजकुमारे।
विधुमुखि भाग्यं परमविमृग्यं किमपरमिह संसारे ।।
श्यामशरीरे मदनाधीरे न कुरु हठं सखि राधे।
निरवधि सदये दुःखितहृदये प्रकटय करुणं स्तोकम्।
न गणय लोकं नाशय शोकं कुरु सस्मितमवलोकम्।
परिहृतसकलं प्रियमतिविकलं घनघनकृतनिःश्वासम्।
प्रतिपदमधुरं स्मरशरविधुरं जीवय निजपददासम्।
मा वद परुषं कुरु मयि न रुषं विरचय न भ्रूभङ्गीम्।
हरिमुखकमले नवरसविमले खेलय लोचनभृङ्गीम्।
दर्शय वदनं विकसितमदनं राकाचन्द्रमनोज्ञम्।
वञ्चय न जनं निजमतिसुजनं ललितानङ्गरसज्ञम्।
व्रजपतितनये कृतबहुविनये त्रिभुवनमोहनरूपे।
नेयमुपेक्षा तव शुभकक्षा जाग्रति मन्मथभूपे।
निगदरहस्यं दयितवयस्यं परिचयेङ्गितमल्पम्।
भ्रमदलिपुञ्जं त्वनु नवकुञ्जं कुरु सखि किशलयतल्पम्।
श्रुतिहरिचरिता मधुरिमभरिता मञ्जुलरसमञ्जूषा।
रसदसरस्वतिवागतिमधुमति भवतु तव श्रुतिभूषा ।।

'ओजः समासभूयस्त्वमेतत् गद्यस्य लक्षणम्' कहकर समासबाहुल्य वाक्यविन्यास को गद्य में ही अधिक प्रशंसनीय माना जाता है। सङ्गीतमाधवम् ने समासों का स्वच्छन्द रूप से प्रयोग कर इस मान्यता को चुनौती दी है। कहीं-कहीं तो गीति की एक-एक पंक्ति में केवल एक ही समस्त पद समा सका है। यथा—

अद्भुतसुरभिसमयसहजोदयमधुरलतातरुजालम्।
नवमकरन्दमहाद्भुतपरिमलमत्तविचलदलिमालम्।

कविताकामिनी के प्रसाधनों में उपमा, रूपक, सन्देह, भ्रान्तिमान्, अतिशयोक्ति, वक्रोक्ति आदि प्रमुख हैं। वक्रोक्ति का वैचित्र्य द्रष्टव्य है—

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कोऽयं द्वारि विधुः प्रियालि तदसावलम्बतामम्बरं
बाले नायक एष ते किल तदा हारान्तरे तिष्ठति ।
मुग्धे माधव एष हन्त वितनुर्न्यस्तं कथं नो भवेत्
राधाया इति वाक्छलेन सहसाश्लेषी हरिः पातु वः ।।

प्रबोधानन्दजी ने संगीतमाधवम् में प्रयुक्त श्लोकों को वर्णवैविध्य छन्दों परिधान दिया है। इससे कविता का सौन्दर्य तो खिल ही उठा है, कथाप्रवाह को गति मिलती रही है। सुधी पाठकों के सौविध्य हेतु प्रकृत काव्य में प्रयुक्त छन्दों परिशिष्ट तीन में प्रदर्शित किया गया है।

काव्य की संरचना पर निस्सन्देह जयदेव-कृत गीतगोविन्द का प्रभाव है। ा कि पूर्व में कहा जा चुका है संगीतमाधवम् रसोपासना की जिस रीति का सरण हुआ है वह हितहरिवंश गोस्वामी की रसोपासना पद्धति है। हितहरिवंश वामी के राधासुधानिधि ग्रन्थ का प्रभाव संगीतमाधवम् पर स्पष्ट परिलक्षित ा है। राधासुधानिधि के निम्नांकित दो पद्य तो किञ्चित् परिवर्तन के साथ संगीतमाधवम् में क्रमशः 20वें एवं 50वें क्रमांक पर उद्धृत हैं।

अनङ्गजयमङ्गलध्वनितकिङ्किणीडिण्डिम—
स्तनादिवरताडनैर्नखरदन्तघातैर्युतः ।
अहो चतुरनागरी नवकिशोरयोर्मञ्जुले
निकुञ्जनिलयाजिरे रतिरणोत्सवोज्जृम्भते ।। राधासुधानिधितोत्र—224

गता दूरे गावो दिनमपि तुरीयांशमभजद्
वयं दातुं क्षान्तास्तव च जननी वर्त्मनयना ।
अकस्मात्तूष्णीके सजलनयने दीनवदने
लुठत्यस्यां भूमौ त्वयि न हि वयं प्राणिणिषवः ।। राधासुधानिधिस्तोत्र-228

एक अन्य पद्य में राधासुधानिधि के 52वें पद्य का तृतीयचरण संगीतमाधवम् ।वें पद्य के तृतीय चरण के रूप में मिलता है। एतदतिरिक्त निजोल्लासवर्णन ा पन्द्रहवें सर्ग में प्रबोधानन्दजी ने इसे हितसार कहा है तथा नित्यविहार जैसे तों का बहुलता से प्रयोग किया है। संगीतमाधवम् की रसोपासना को राधावल्लभ ादाय के दायरे में बांधा जा सकता है परन्तु इसका काव्यत्व किसी सीमा में जाने योग्य तो कतई नहीं है। यह तो सर्वजनहिताय सर्वजनसुखाय है। धानन्दजी की वाणी की श्रवणीयता मात्र भक्ति और शृङ्गार के सामञ्जस्य कारण ही नहीं अपितु मधुर कोमलपदविन्यासिनी कविताकामिनी के प्रसाधनों ी है। इसकी कलात्मक रमणीयता कम महत्त्व की नहीं है।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

हां, संगीतमाधवम् की पुष्पिका में इसे महाकाव्य घोषित किया है प
पन्द्रह सर्गों में निबद्ध यह काव्य महाकाव्यत्व के निकष पर खरा उतरता है या
यह चिन्तनीय है।

संगीतमाधवम्--पाठप्रस्तुति

संगीतमाधवम् का सम्पादन दो हस्तलिखित ग्रन्थों के आधार पर
गया है। ये दोनों पाण्डुलिपियां राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपु
संगृहीत हैं। इनका परिचय निम्नांकित है—

ग्रन्थांक—23397
1. ग्रन्थ नाम—सङ्गीतमाधवम्
कर्त्ता—प्रबोधानन्द सरस्वती
माप—28.5 × 15 से. मी.
पत्र—21
पंक्ति प्रतिपत्र—12
अक्षर प्रतिपंक्ति—41
लिपिकाल—संवत्—1890, माघ शुक्ला 4 बु.

ग्रन्थांक—11526
2. ग्रन्थ नाम—संगीतमाधवम्
कर्त्ता—प्रबोधानन्द सरस्वती
माप—33.5 × 15 से. मी.
पत्र—25
पंक्ति प्रतिपत्र—10
अक्षर प्रतिपंक्ति—38
लिपिकाल—संवत्—1927, मास. श्रा.व. 7.

पाठान्तर प्रस्तुत करने के सौविध्य से ग्रन्थांक 23397 की 'क' संज्ञा
ग्रन्थांक 11526 की 'ख' संज्ञा कर दी है। प्राचीन एवं शुद्ध होने के कारण
प्रति को आधार प्रति माना गया है। दोनों पाण्डुलिपियों में पाठभेद होने की सि
में 'क' प्रति के पाठ को ही ऊपर रखा गया है। 'ख' प्रति के पाठ को पादटिप्पणी
सुरक्षित रखा गया है।

विदुषां वशंवदः
गोविन्दराम चरौ

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सङ्गीतमाधवम्

॥ श्रीराधाकृष्णाभ्यां नमः ॥

सदानन्दे वृन्दावननिबिडकुञ्जे नवतडिद्
घनज्योतिः पुञ्जं किमपि कलगुञ्जन्मधुकरे ।
नवोन्मीलत्कैशोरकललितलीलारसमयं
प्रियं तन्मे जीयान्मधुरमधुरं धामयुगलम् ॥१॥

नवचम्पकगौरकान्तिभिः कृतवृन्दावनहेमरूपताम्[1] ।
भज कामपि विश्वमोहिनीं मधुरप्रेमरसाधिदेवताम् ॥२॥

महाप्रेमरसज्योतिरपारावारवारिधेः ।
मध्ये मोहनकैशोरं सारं राधाभिधं नुमः ॥३॥

परमरतिरसाम्भोराशिकल्लोलमाला
तरलितसुकुमारः श्यामसम्मोहनाङ्गः ।
व्रजललितकिशोरीलम्पटः कोपि जीयात्
प्रमदमदनलीलामुग्धमुग्धः किशोरः ॥४॥

उत्तरङ्गमहानङ्गरसाब्धि[2] तरलं महः ।
पुलकाञ्चितसर्वाङ्गं भज राधाङ्गभूषणम् ॥५॥

---

१. ख—रूपहेमताम्
२. ख—रसाञ्चि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परमरसविभूतेर्दैवतस्यावतारं
जगति कृतरहस्यप्रेमभक्तिप्रचारम्[1] ।
लवणजलधिकूले कल्पितानल्पलीलं
स्फुरदरुणदुकूलं धामगौरं स्मरामि[2] ॥६॥

नित्योन्मदानन्दरसैककन्दं कन्दर्पलीलाद्भुतकेलिवृन्दम् ।
श्रीराधिकामाधवयोर्दिदृक्षुस्तुष्टाव वृन्दावनमेव काचित् ॥७॥

॥ बसन्तरागेण गीयते ॥१॥

अद्भुतसुरभिसमयसहजोदयमधुरलतातरुजालम् ।
नवमकरन्दमहाद्भुतपद्मिमलमत्तविचलदलिमालम् ॥१॥

वन्दे वृन्दाविपिनममन्दम् ।
प्रेममहारसवेगविजृम्भितमदनमहोत्सवकन्दम् ॥ध्रु॥

विकसदशोकबकुलकुलचम्पकमाधविकाभिरनूनम् ।
सह निजवल्लभया व्रजनागरलून[3]विचित्रविसूनम् ॥२॥
॥ वन्दे वृन्दाविपिन ॥

ललितकलिन्दसुतालहरीकृतमृदुमृदुशीकरवर्षम् ।
तुमुलरतिश्रमितालसतनुवररसिकमिथुनकृतहर्षम् ॥३॥
॥ वन्दे वृन्दाविपिन ॥

अद्भुतरससरसीलसदुपदलमुकुलितकनकसरोजम् ।
प्राणसमाकुचलोचनसंस्मृति[4]कृतहरितीव्रमनोजम् ॥४॥
॥ वन्दे वृन्दाविपिन ॥

१. ख—प्रचारम्
२. क—नमामि
३. ख—नूनं
४. ख—संस्मृत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

आस्तृतकुसुमघटितमधुभाजनमञ्जुलकुञ्जकुटीरम् ।
राधामाधवनवरतिलीलागानमुदाकुलकीरम् ॥५॥
॥ वन्दे वृन्दाविपिन ॥

कुसुमितसुफलितकल्पलतावृतसुरतरुकृतपरभागम् ।
विविधमणीवृतभूतलनिपतितनवकर्पूरपरभागम्[1] ॥६॥
॥ वन्दे वृन्दाविपिन ॥

शिखिकुलनटनमृगीचकितेक्षणपिकपञ्चमकृतशोभम् ।
प्रेमसुधाम्बुधिदोलितखगपशुसङ्गमहामुनिलोभम् ॥७॥
॥ वन्दे वृन्दाविपिन ॥

नीलतमालवनान्तरनिलयनकौतुकिपिच्छयवतंसम् ।
परिमलहरमृदुमलयानिलभरकृतराधापथशंसम् ॥८॥
॥ वन्दे वृन्दाविपिन ॥

ललितकदम्बतले धृतभङ्गिममोहनवादितवंशम् ।
निरवधिनिजसुखसाररसोन्मदहरिकृतपरमप्रशंसम् ॥९॥
॥ वन्दे वृन्दाविपिन ॥

प्रियरसमत्तसरस्वतिवर्णितवृन्दावनमहिमानम् ।
पिबत बुधाः श्रवणेन सुधारससारमुधाकरगानम् ॥१०॥
॥ वन्दे वृन्दाविपिन ॥

सान्द्रप्रेमरसामृतैकलहरीस्पन्दीनिमन्दीकृत-
ब्रह्मानन्दसमाधिसन्मुनिमनोहार्य्येककेलिस्थली ।
ईशेनाथ वितर्क्य दिव्यमहिमान्या विभ्रती श्रेयसे
भूयान्नः पशुपक्षिभूरुहलतावृन्दानि वृन्दाटवी ॥८॥

१. ख—परागम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सहजाद्भुतसत्प्रभावतस्तव वृन्दावनकेवलं कदा ।
त्वयि नित्यविहारि तन्महारसिकद्वन्द्वमहं विलोकये ।।९।।

अथ रसमयराधा कृष्णदास्यैकलुब्धा
निरवधि मृगयन्ती कुञ्जगेहावलीषु ।
तदतिमधुरलीलानन्दि राधासखीना-
मिदमकलयदारात् कीर्त्तनं सामृगाक्षी ।।१०।।

॥ मङ्गलगुर्ज्जरीरागेण गीयते ।।२।।

प्रणत सकलसुखदायक ! व्रजनायक ! हे ।
[1]वल्लवराजकुमार ! जय जय प्राणसखे ।।

[2]स्फुटसरसीरुहलोचन ! भयमोचन ! हे ।
पालितनिजपरिवार जय जय प्राण सखे ।।१।।

व्रजतरुणीनवनागर ! रससागर ! हे ।
रचितमहारतिरङ्ग ! जय जय प्राण सखे ।

रसिकयुवतिपरिहासक ! कृतरासक ! हे ।
ललितानङ्गतरङ्ग ! जय जय प्राणसखे ।।२।।

मणिमयवेणुलसन्मुख ! नतसम्मुख ! हे ।
मृदुमृदुहासविलास ! जय जय प्राणसखे ।।
कुलवनितावृत[3]भञ्जन ! रिपुगञ्जन ! हे ।
नवरतिकेलिविलास ! जय जय प्राणसखे ।।३।।

१. ख—वल्लभ
२. ख—स्फुटरेंसीरुह
३. ख—व्रज

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मधुरमधुररसनूतन ! हतपूतन ! हे ।
नवघननीलशरीर ! जय जय प्राणसखे ।।
तपनसुतातटसन्नट ! रतिलम्पट ! हे ।
धृतवरमणिगणहीर ! जय जय प्राणसखे ।।४।।

स्फुरदरुणाधरपल्लव ! व्रजवल्लव ! हे ।
राधामानसहंस ! जय जय प्राणसखे ।।
श्रीलसरस्वतिगीतकं हरिभावदम् ।
मङ्गलमिह विदधातु जय जय प्राणसखे ।।५।।

राधायाः स्तनहेमकुम्भयुगले दत्त्वा करं पल्लवा-
भासं कोमलमूरुचारुकदलीकाण्डं च कृत्वोदितम् ।
निर्माय प्रतिरोधिहस्तवलयध्वानं च तूर्यस्वनं
गोविन्दः कृतमङ्गलो रतिरणारम्भे समुज्जृम्भते ।।११।।

मधुरं मधुरं मधुद्विषस्तदिदं गीतमतीव मङ्गलम् ।
श्रवणाञ्जलिभिर्निपीय सा स्मृतगोविन्दपदेदमुज्जगौ ।।१२।।

।। श्रीवसन्तरागेण गीयते ।।३।।

मदशिखिपिच्छमुकुटपरिलाञ्छितकुञ्चितकचनिकुरम्बे ।
मुखरितवेणुहृतत्रपधावित नवनवयुवति कदम्बे ।।१।।

वसतु मनो मम मदनगोपाले ।
नवरतिकेलिविलासपरावधिराधासुरतरसाले ।।ध्रु.।।
कलितकलिन्दसुतापुलिनोज्ज्वलकल्पमहीरुहमूले ।
किङ्किणीकलरवरञ्जितकटितटकोमलपीतदुकूले ।।२।।
।। वसतु मनो मम ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुरलि[1]मनोहरमधुरतराधरघनरुचिचोरकिशोरे ।
श्रीवृष[2]भानुकुमारीमोहनरुचिमुखचन्द्रचकोरे ॥३॥
॥ वसतु मनो मम ॥

गुञ्जाहारमकरमणिकुण्डलकङ्कणनूपुरशोभे ।
मृदुमधुरस्मितचारुविलोकन[3]रसिकवधूकृतलोभे ॥४॥
॥ वसतु मनो मम ॥

मत्तमधुव्रतगुञ्जितरञ्जितगल[4]दोलितवनमाले ।
गन्धोद्वर्तितसुवलितसुन्दरपुलकितबाहुविशाले ॥५॥
॥ वसतु मनो मम ॥

उज्ज्वलरत्नतिलकललितालिकसकनकमौक्तिकनासे ।
शारदकोटिसुधाकिरणोज्ज्वलश्रीमुखकमलविलासे ॥६॥
॥ वसतु मनो मम ॥

ग्रीवाकटिपदभङ्गिमनोहरनवसुकुमारशरीरे ।
वृन्दावननवकुञ्जगृहान्तररतिरणरङ्गसुधीरे ॥७॥
॥ वसतु मनो मम ॥

परिमलसारसकेशरचन्दनचर्चिततरलसदङ्गे ।
परमानन्दरसैकघनाकृतिप्रवहदनङ्गतरङ्गे ॥८॥
॥ वसतु मनो मम ॥

पदनखचन्द्रमणिच्छविलज्जितमनसिजकोटिसमाजे ।
अद्भुतकेलिविलासविशारदव्रजपुरनवयुवराजे ॥९॥
॥ वसतु मनो मम ॥

सरसदसरस्वतिवर्णितमाधवरूपसुधारससारे ।
रमयत साधु बुधो निजहृदयं भ्रमथ मुधा किमसारे ॥१०॥
॥ वसतु मनो मम ॥

---

१. क—मुरली
२. ख—श्रीवृषभभानु
३. क—विलोचन
४. ख—गददोलित

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कुवलयदलनीलः कोटिकन्दर्पलीलः
कनकरुचिदुकूलः केकिपिच्छावचूलः ।
मम हृदि कुलबालानीविविश्रंसिवंश-
ध्वनिरुदयतु राधापद्मिनीराजहंसः ॥१३॥

अद्योत्तुङ्गपयोधराद्रियुगलं बिभ्रत्कराभ्यां निजं
त्राता गोकुलमात्मयोनिविशिखासारैर्हतं माधवः ।
राधामित्यभिसारिणीं चतुरया सख्या भयोत्कम्पितां
लब्ध्वैकान्तवनान्तरे रतिकलाहृष्टो हरिः पातु वः ॥१४॥

इति श्रीप्रबोधानन्दसरस्वतीकृते
सङ्गीतमाधवे श्रीवृन्दावनोत्सवो नाम प्रथमः सर्गः ॥१॥

० ० ०

द्वितीयः सर्गः

अथ सा व्रजभीरुरग्रतः
परमप्रेमरसावशाकृतिः ।
समुदीक्ष्य निजेश्वरी सखी
पदमूले न्यपतत्प्रहर्षतः ॥१५॥

वदन्तु वः प्राणधनं किशोर-
द्वन्द्वं मुदा क्रीडति कुत्र मोहनम् ।
इत्थं समुत्कण्ठितया तयोक्ते
ताः स्नेहपूर्णाः कथयाम्बभूवुः ॥१६॥

॥ गुर्ज्जरीरागेण गीयते ॥४॥

नीलजलदरुचिरुचिरकलेवरराजितचम्पकदाम ।
विमलविडोजायुधपरिवृतनवहरिमणिमञ्जुलधाम ॥१॥

❀ पक्षे इन्द्रियवृन्दं आत्मयोनिर्मनोजः
पक्षे सहस्राक्षः इत्यादि स्पष्टीकरणमपि दृश्यते

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तीरे [1]तरणिदुहितुरविरामम् ।
खेलति मिथुनमहो अभिरामम् ।। ध्रु. ।।
उन्मदमदनमहारसविह्वलमोहितदिव्यकिशोरम् ।
अद्भुतरूपविलासचमत्कृतिसिद्धहृदयधृतिचोरम् ।।२।।
।। तीरे तरणि ।।

वृन्दावननवकुञ्जगृहोदरदुर्ज्जयरतिरणलोलम् ।
श्लिष्टतिलक[2]परिखण्डितमणिसरश्रमजलकलितकपोलम् ।।३।।
।। तीरे तरणि ।।

मिथ उपधाय लसत्कदलीनिभकोमलमूरुमुदारम् ।
स्वपिति कदापि कदापि च गुम्फति कमपि मनोहरहारम् ।।४।।
।। तीरे तरणि ।।

चुम्बति गुप्तकथाछलतः क्वचिदवलम्ब्य श्रुतिमूलम् ।
क्वचन परस्परमतिशयकृतरुचि परिधापयति दुकूलम् ।।५।।
।। तीरे तरणि ।।

क्वापि मिथः परिमण्डति लिम्पति पश्यति निजप्रतिबिम्बम् ।
हंसमिथुनमनुयाति करोति च नटशिखियुग्मविडम्बम् ।।६।।
।। तीरे तरणि ।।

क्वापि परस्परवेणिविभूषणरचितोद्दामविलासम् ।
गायति नृत्यति हसति विवलगति[3] प्रतिपदमदनविकाशम् ।।७।।
।। तीरे तरणि ।।

क्वचन गताम्बरविलुलितकुन्तलत्रोटितमौक्तिकहारम् ।
कृतिपरिरम्भणचुम्बनशतशतयामुनतीरविहारम् ।।८।।
।। तीरे तरणि ।।

१. ख—तपन
२. ख—तिष्ठतिकल
३. ख—विलज्यति

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधामाधवकेलिमहोत्सवमतिरसमधुरिमसारम् ।
गायत[1] रसिकसरस्वतीवर्णितमुज्ज्वलभावविकारम् ।।९।।
।। तीरे तरणि ।।

निखिलनिगमदूरं प्रेममाध्वीकपूरं
न खलु भगवदीये क्वापि लब्ध्वोपलम्भम् ।
तदति मधुरधामद्वन्द्वमानन्दकन्दं
कनकमरकताभं[2] भाति वृन्दावनेऽस्मिन् ।।१७।।

प्रथममुरलिरन्ध्रे रञ्जिता कुञ्चिबिम्बा-
धरमिह सखि राधां भाति गायन्मुरारिः ।
इतर विवरचञ्चच्चारुमृद्वङ्गुलीनां
नखमणिरुचिवीचीमुद्रिकालिच्छटाभिः ।।१८।।

श्रुत्वा राधा मधुपतिमहानन्दसाम्राज्यसारो-
दारस्फारामृतरसमयानङ्गलीलाविहारम् ।
तृप्तिं नैव व्रज मृगदृशः प्राप्य सप्रेमभूयः
श्रीराधायाश्चरितममृतं पृच्छमाना जगुस्ताः ।।१९।।

।। भैरवरागेण गीयते ।।५।।

अभिमतमनुप्रतिकूलकचरिता ।
खेदमिवाभजदतिसुखभरिता ।।१।।
राधा विलसति सह मधुरिपुणा ।
नव नव रतिरसकेलिषु निपुणा ।।ध्रु॥।

किमपि मृषा भयवेपथुवलिता ।
भवति रसज्ञभुजान्तरमिलिता ।।२।। राधा विलसति०।।

---

१. ख—गायति
२. ख—कनकमकरताभं

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

रमणमहेतुकरोषणहृदया ।
क्षिपति चलति कतिपदमथ सदया ।।३।। राधा विलसति० ।।

मधुमारुतहृतनिजतनुवसना ।
भवति दयितपीताम्बरवसना ।।४।। राधा विलसति० ।।

तरुविटपार्पितपल्लवकलिता ।
प्रियकृतहिन्दोलनमनुचलिता ।।५।। राधा विलसति० ।।

प्रियकुसुमादिकयाचनविरता ।
पुनरुपनतमनुहेलननिरता ।।६।। राधा विलसति० ।।

कुचमकरीलिखने महमहसा[१] ।
प्रियमचतुर इति निन्दति सहसा ।।७।। राधा विलसति० ।।

श्रुतिरसभणितसरस्वतिभणिता ।
मुदमुपयातु परामिह जनता ।।८।। राधा विलसति० ।।

अहो मुखरनूपुरप्रकरकिङ्किणीडिण्डिम-
स्वनादिवरताडनैर्नखरदन्तघातैर्युतः ।
सुदुर्धरमदान्धयोर्नवनिकुञ्जपुञ्जाजिरे
तदद्भुतकिशोरयोः सुरतसङ्गरोज्जृम्भते[२] ।।२०।।

तदाश्चर्यं प्राणाधिकदयितयोः केलिविभवं
निलीनाः पश्यन्तो भयमपि रसाम्भोधिपतिताः ।
क्षणादप्यासन्नाः पदकमलसंवाहनपराः
प्रियं तत्संवीज्य[३] द्वयमहह भूयः समुदिता ।।२१।।

यदि त्वमिन्दीवरसुन्दराक्षि !
दिदृक्षसे नः प्रिययोर्विलासम् ।

---

१. क—मदनमहसा, ख—महनमहसा
२. राधासुधानिधौ २२४ तमे स्थानेऽपि दृश्यते
३. क—संवीक्ष्य

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सर्वात्मना प्रेमरसेन राधा-
पदारविन्दं स्मर तद्रसौघम् ॥२२॥

अथ सा मृगशावलोचना[१] धृतराधापददास्यलालसा ।
सरसं निजजीवितेश्वरीचरणध्यानपरेदमुज्जगौ ॥२३॥

॥ बसन्तरागेण गीयते ॥६॥

वरसीमन्तरसामृतसरणि[२]धृतसिन्दूरसुरेखाम् ।
श्रीवृषभानुकुलाम्बुधिसम्भवसुभगसुधाकरलेखाम् ॥१॥

स्मरति मनो मम निरवधि राधाम् ।
मधुपतिरूपगुणश्रवणोदितसहजमनोभवबाधाम् ॥ध्रु०॥
सुरुचिरकवरिविराजितकोमलपरिमलमल्लिसुमालाम् ।
मदचलखञ्जनखेलनगञ्जनलोचनकमलविशालाम् ॥२॥
॥ स्मरति मनो मम० ॥

मदकरिराजविराजदनुत्तमचलितललितगतिभङ्गीम् ।
अतिसुकुमारकनकनवचम्पकगौरमधुरमधुराङ्गीम् ॥३॥
॥ स्मरति मनो मम० ॥

मणिकेयूरललितवलयावलिमण्डितमृदुभुजवल्लीम् ।
प्रतिपदमद्भुतरूपचमत्कृतिमोहनयुवतिमतल्लीम् ॥४॥
॥ स्मरति मनो मम० ॥

मृदुमृदुहासललितमुखमण्डलकृतशशिबिम्बविडम्बाम् ।
किङ्किणीजालखचितपृथुसुन्दरनवरसराशिनितम्बाम् ॥५॥
॥ स्मरति मनो मम० ॥

चित्रितकञ्चुलिकास्थगितोद्भटकुचहाटकघटशोभाम् ।
स्फुरदरुणाधरसीधुसुधारसकृतहरिमानसलोभाम् ॥६॥
॥ स्मरति मनो मम० ॥

१. ख—सामृममसावलोचना
२. ख—सारिणि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सुन्दरचिबुकविराजितमोहनमेचकबिन्दुविलासाम् ।
सकनकरत्नखचितपृथुमौक्तिकरुचिरुचिरोज्ज्वलनासाम् ।।७।।
।। स्मरति मनो मम० ।।

उज्ज्वलरागरसामृतसागरसारतनुं सुखरूपाम् ।
निपतितमाधवमुग्धमनोमृगनाभिसुधारसकूपाम् ।।८।।
।। स्मरति मनो मम० ।।

नूपुरहारमनोहरकुण्डलकृतरुचिमरुण[1]दुकूलाम् ।
पथि पथि मदनमदाकुलगोकुलचन्द्रकलितपदमूलाम् ।।९।।
।। स्मरति मनो मम० ।।

रसिकसरस्वतिगीतमहाद्भुतराधारूपरहस्यम् ।
वृन्दावनरसलालसमनसामिदमुपगेयमवश्यम् ।।१०।।
।। स्मरति मनो मम० ।।

सुभगशिखरलक्ष्मीकोटिकाम्यैकपादा-
धृतनखमणिचन्द्रज्योतिरामोदमात्रा ।
अतिमधुरचरित्रानङ्गलीलाविलासा
मम हृदि रसमूर्तिः स्फूर्तिमायाति[2] राधा ।।२४।।

नवरसमदघूर्णन्माधवप्राणकोटि-
प्रियनखमणिशोभा सर्वसौभाग्यभूमिः ।
स्फुरतु हृदि सदा मे कोऽपि काश्मीररोचि-
र्व्रजनगरकिशोरीवृन्दसीमन्तभूषा ।।२५।।

गोविन्दप्राणसर्वस्व मुखचन्द्रैकचन्द्रिका ।
कापि प्रेमरसोदारा किशोरी मम जीवनम् ।।२६।।

चेतः कामपि कुन्दसुन्दरसुधा निस्पन्दि मन्दस्मित-
ज्योतिर्मोहनवक्त्रचन्द्रविगलत्प्रेमामृताम्भोनिधिम् ।

१. ख—सुरुचि
२. ख—आयातु

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रत्यङ्गोच्छुलितानुरागसहजानङ्गोत्सवैकावधि[१]
श्रीवृन्दावनचन्द्रदुर्मदमनश्चोरीं किशोरीं स्मर ॥२७॥

मुक्तादामनि न प्रसारय करं दामोदरस्त्वं यतो
नो पीताम्बर शम्बरारि सुभग त्वं मे गृहाणाम्बरम् ।
हस्तं न स्तनयोर्निधेहि यमजौ भग्नौ सुतुङ्गौ यतो
राधाया इति वाक्यभङ्गिविरत स्मेरो हरिः पातु वः ॥२८॥

इति श्रीसङ्गीतमाधवे राधामाधवमहोत्सवो नाम

द्वितीयः सर्गः ॥२॥

○ ○ ○

तृतीयः सर्गः

अथ निजरसधाराकन्दगोविन्दराधा
मधुरमधुरहासप्रस्फुरद्वक्त्रचन्द्रम् ।
दिशि दिशि पथि[२] चेतुं सञ्चरद् दृक्चकोरी[३]
कलितपुरुषं तां दर्शयन्त्यो जगुस्ताः ॥२९॥

॥ मालवगौडा[४]रागेण गीयते ॥६॥

मृगमदलिप्तरुचिरवपुषा परिरञ्जितघनघनसारम् ।
वेणिभुजङ्गिविराजितया शिखिचन्द्रकचूडमुदारम् ॥१॥

सखि हे गोकुल राजकुमारम् ।
राधिकया सह कलय मनोजवशाधिकया सुकुमारम् ॥ध्रु०॥

---

१. ख—विधिम्
२. ख—परिचेतुं
३. क—चकोरीं
४. 'मालवगौड' इति नाम्ना प्रसिद्धः ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवचपलाचपलाङ्गरुचा रसवर्षणवारिदजालम् ।
काञ्चनवल्लरिको[1]ज्ज्वलया द्युतिनिर्जितनीलतमालम् ।।२।।
।। सखि हे गोकुल० ।।

अनिलतरलनलिनीसुललितया मरकतमधुकरलीलम् ।
अभिनवसङ्गमभयकम्पितया बहुविधनमनुनयशीलम् ।।३।।
।। सखि हे गोकुल० ।।

कोटिपरमरतिशोभनयाद्भुतनवकन्दर्पविलासम् ।
स्मेरसरसकुमुदिनिप्रमुदितया शरदमृतांशुप्रकाशम् ।।४।।
।। सखि हे गोकुल० ।।

वरकरिणीमदविह्वलया नवरतिरसमत्तकरीन्द्रम् ।
अद्भुतकेलिविचक्षणया स्मरतन्त्रमहानिपुणेन्द्रम् ।।५।।
।। सखि हे गोकुल० ।।

उज्ज्वलप्रेमरसामृतघनया परमसुखाम्बुधिसारम् ।
अद्भुतहाटकपुत्रिकया नवमरकतमूर्तिविहारम् ।।६।।
।। सखि हे गोकुल० ।।

नवतारुण्यनिवेशमधुरया मोहनदिव्यकिशोरम् ।
अरुणदुकूलविराजितया मृदुकुञ्चितपीतनिचोरम् ।।७।।
।। सखि हे गोकुल० ।।

कृतपणबन्धनखेलनया जितवादहृतस्तनचेलम् ।
बहुविधहासविलासनिपुणया प्रतिपदमद्भुतखेलम् ।।८।।
।। सखि हे गोकुल० ।।

राधामाधवरूपकलोदयमिति श्रृणुतातिमनोज्ञम् ।
मुदितसरस्वतिगीतमहो कुरु हृदयमिहातिरसज्ञम् ।।९।।
।। सखि हे गोकुल० ।।

१. ख—वल्लरिरेको

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवपरिमलमल्लीदामधम्मिल्लभारां
कुचकलशविराजत्कञ्चुलीतारहाराम् ।
दिशि दिशि रसधारामाकिरन्तीमपारां
मधुरतरविहारां पश्य राधामुदाराम् ॥३०॥

बाले विलोकय किशोरमनङ्गलीला
खेलायमानमदशोणविलोचनाब्जम् ।
सर्वाङ्गमुल्लसितमुत्पुलकं दधानं
राधाङ्गसङ्गरसरङ्गतरङ्गलोलम् ॥३१॥

शोभासिन्दूरविन्दोः क्वचन नवनखोल्लेखलक्ष्मापरत्र
व्यक्ता काश्मीरमुद्रा क्वचिदपि ललितैः कुत्रचित्कज्जलाङ्कः ।
कुत्रापि भ्राजमानं मणिवलयघटाचिह्नमित्थं दधानं
साक्षादेवैष राधासुरतरसमहो वीक्ष्यतां श्यामधामः ॥३२॥

अये कोयं चन्द्रः स कथमिह वा श्यामलतर-
स्तमालोयं नासौ यदतिललितं वा न चलति ।
नवाम्भोदः कस्माद्भवतु रसदः शारदनिशा
पतिर्वा मुग्धाभून्मधुपतिमुदीक्ष्य व्रजवधूः ॥३३॥

अनङ्गस्य प्राणाः किमु हृदयमेतन्मधुपते-
र्महालावण्यानामपि[1] परमजीवं विजयते ।
रसश्रीर्वा साक्षान्मधुरमधुरप्रेमविभवे-
र्यतर्क्या श्रीराधां कमलनयनां तर्कसदृशाम् ॥३४॥

द्विधाभूतमिव प्राणसारद्वन्द्वं बहिः स्थितम् ।
किशोरमिथुनं दृष्ट्वा सा मग्ना प्रेमसागरे ॥३५॥

---

१. ख—महालाण्यानान्वय

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

महाप्रीति[१]रसानन्दगलद्वाष्प[२]विलोचना ।
गिरा गद्गदया प्राह वन्दमाना[३] निजेश्वरीम्[४] ।।३६।।

रामकेरीरागेण गीयते ।।८।।

शिक्षय मामनुपमनिजकल्पितसङ्गीतकबहुभङ्गीम् ।
हरिमुपगायय या भवतीमहमीक्षे घनपुलकाङ्गीम् ।।१।।

वन्दे भवतीमतुलरसराशिम् ।
वृन्दारण्यनिकुञ्जविलासिनि ! कुरु मां निजपददासीम् ।।ध्रु.।।

कारय निजनागरचरणद्वयपरिचरणं सुखसारम् ।
परिस्तारय हरिणाक्षि नवं नवमभिनवकुञ्जमुदारम् ।।२।।
।। वन्दे भवतीमतुल. ।।

विरचितकुसुमशयनमनुकारय मधुरमुखेन निदेशम् ।
संवाहय ललिताङ्गि मया निजपदमवबन्धय केशम् ।।३।।
।। वन्दे भवतीमतुल. ।।

नवताम्बूलसुचर्वितमभिमतमाननचन्द्रनिगीर्णम् ।
[५]सृक्कणिगलितमहं स्पृहये तव कृपया किमपि वितीर्णम् ।।४।।
।। वन्दे भवतीमतुल ।।

तव प्रियश्यामकिशोररसोत्सवमनिशमनन्तमपारम् ।
अनुभवितास्मि भवत्पदपङ्कजकिङ्करिकैरससारम् । ५।।
।। वन्दे भवतीमतुल ।।

१. ख—प्रेम
२. ख—गतहास्य
३. ख—वन्द्यमान
४. ख—महेश्वरीम्
५. ख—सृक्वणि

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मम कलयात्मचरणमहिमोदितबहुचतुरायितरीतिम् ।
मेलयितास्मि कदा निशि वा हरिणा भवतीं गतभीतिम् ।।६।।
।। वन्दे भवतीमतुल० ।।

अयि नवरसिकयुवतिकुलमण्डनपदनखचन्द्रविलासे ।
आर्त्तजने मयि नहि विमुखीभव निजपददास्यधृताशे ।।७।।
।। वन्दे भवतीमतुल० ।।

इति वृषभानुसुताचरणाम्बुजनिपतितवरतनुगीतम् ।
तद्रसलुब्धसरस्वतिवर्णितमतिसुखदं श्रुतिपीतम् ।।८।।
।। वन्दे भवतीमतुल० ।।

अतिरसमदवृन्दारण्यचन्द्रेण शश्वत्
पुलकितभुजदण्डेनाङ्कमारोप्यमाणा ।
अयि नवसुकुमारस्फारलावण्यमूर्त्ते
रसमयि मयि राधे स्निग्धदृष्टिं विधेहि ।।३७।।

अथ सहजविवृद्धस्नेहवाष्पाकुलाक्ष्या
ललितललितमूर्त्या राधयालिङ्गिताङ्गी ।
निजरमणपदाब्जं वन्द्यमाना तयैव
प्रणयकलपदं सा प्राह गोविन्दचन्द्रम् ।।३८।।

सौराष्ट्रीपहाडीरागेण गीयते ।।९।।

वृन्दारण्यपुरन्दरसुन्दरकुन्दकलिद्विजवृन्द ।
मन्दहसितभुवनैकमनोहरवदनविकसदरविन्द ।।१।।

माधव रसमय परमानन्द ।
निजदयितापददास्यरसे मामभिषेचय सुखकन्द ।।ध्रु०।।

राधावदनसरोरुहसम्भृतसीधुरसोन्मदभृङ्ग ।
प्रतिपदमुच्छलितातिरसार्णवसमुदितकेलितरङ्ग ।।२।।
।। माधव रसमय० ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधापीनपयोधरगिरिस्विरयुग्मनियन्त्रितचित्त ।
प्रतिमृदुवाक्यभरोदितदुर्द्धरमदनमहामदमत्त ॥३॥
॥ माधव रसमय० ॥

राधाकेलिकुरङ्गतदुज्ज्वलगुणजालककृतबन्ध ।
इन्दिरयाऽपि सुदुर्ल्लभलोभनपदमकरन्दसुगन्ध ॥४॥
॥ माधव रसमय० ॥

राधाप्राणसखीगणसौहृदमुदितमनोहरवेश ।
तन्मुखमोहनचन्द्रविलोकनकौतुककृतनिमेष ॥५॥
॥ माधव रसमय० ॥

राधाजीवनभूषणवैभवतनुधनबान्धवमित्र ।
निरवधिरतिरणखेलनरञ्जितबहुविधचित्रिलसुचित्र ॥६॥
॥ माधव रसमय० ॥

राधामानगरलपरिखण्डनवेणुरवामृतधण्ठ ।
राधामहतीललितगीतश्रुतिप्रेमविकुण्ठितकण्ठ ॥७॥
॥ माधव रसमय० ॥

अयि कुतुकेन सरस्वतिविरचितगीतमिदं बुधवृन्द ।
श्रुतिचषकेण निपीय महासुखमिह नु चिरादनुविन्द ॥८॥
॥ माधव रसमय० ॥

जय जय सुखधामश्यामकैशोरलीला
मधुरमधुरभङ्गी ह्रेपितानन्तकाम ।
शरदमृतमयूखज्योतिरानन्दरश्मि
स्मितमुख मम देहि स्वप्रियाङ्घ्र्यब्जदास्यम् ॥३९॥

महारसैकाम्बुधि राधिकायाः
क्रीडाकुरङ्गस्मरविह्वलाङ्ग ।
आनन्दमूर्त्ते निजवल्लभायाः
पादारविन्दे कुरु किङ्करीं माम् ॥४०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथ श्रीगोविन्दे विकसदरविन्देक्षणलसत्
कृपादृष्टया पूर्णप्रणयरसवृष्टया स्नपयति ।
स्थिता नित्यं पार्श्वे विविधपरिचर्य्यैकचतुरा[1]
न केषाञ्चिद् दृश्यं रसिकमिथुनं सा श्रितवती ॥४१॥

राधायाः कुचमण्डले कुवलयश्यामं स्वकीयं वपुः
सङ्क्रान्तं समवेक्ष्य नीलवसनभ्रान्त्या करेण क्षिपन् ।
मा यत्नात्कुरु नो निरंशुकयितुं शक्यावुरोजौ ममे-
त्यामोदस्मितया तया विहसितो मुग्धो हरिः पातु वः ॥४२॥

इति श्रीसङ्गीतमाधवे राधादास्यमहोत्सवो नाम तृतीयः सर्गः ॥३॥

○ ○ ○

चतुर्थः सर्गः

सैवं सार्वदिके निवेद्य सहजप्रोल्लासिकैशोरके
कौमारावधिराधिकामधुपतिस्वच्छन्दविक्रीडने ।
सान्द्रानन्दरसे समाप्लुतवती वृन्दावनान्तस्तयो-
र्दिव्यं दर्शयतो बहिर्नववयो मग्ना तयोरुत्सवे ॥४३॥

कदाचित् श्रीराधा नवनववयोरूपमधुरा-
द्भुतं श्रीगोविन्दं दिशि दिशि जनैर्वर्णितगुणम् ।
स्वभावादुद्भूतप्रणयरसवैक्लव्यवलिता
स्मरन्ती सोद्वेगं रहसि निजगाद प्रियसखीम् ॥४४॥

श्यामगुर्ज्जरीरागेण गीयते ॥१०॥

श्रुतिकुहरे विनिधातुमतिस्पृहममृतमयं बहुचाटुकम्[2] ।
अतिकातरमुखचन्द्रमुदीक्षितुमपि च दृशा चिरमुत्सुकम् ॥१॥

---

१. राधासुधानिधिस्तोत्रस्यापि ५२ तमे पद्यस्य तृतीयः चरणः ।
२. ख—बहुचाटुलम् ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सखि हे श्यामले मम मानसम् ।
वलति वलादिव मदनमदाकुलमतिरसखेलनलालसम् ॥ध्रु०॥

अतिरसमत्ततया गतसाध्वसकलिताम्बरचलदञ्चलम् ।
भ्रूयुगलं परिघूर्ण्य भयं जनयितुमपि धृतरुचिचञ्चलम् ॥२॥
॥ सखि हे श्यामले० ॥

तमपि हसन्तमथो कुचकञ्चुकपाटनकृतबहुसम्भ्रमम् ।
अतितर्जनमनुताडयितुं करवारिरुहेण ससम्भ्रमम् ॥३॥
॥ सखि हे श्यामले० ॥

प्रहरशतं वचनेन तथापि च मुञ्चति हरिरिह न ग्रहम् ।
इति वादिनमनुहर्षयितुं हसितेन समाकुलमन्वहम् ॥४॥
॥ सखि हे श्यामले० ॥

निजरुचिरां सयुगे मम पुलकितमादधतं भुजमुज्ज्वलम् ।
माम[1]धिरोपितवन्तमुरःस्थल उपग्रहीतुमतिविह्वलम् ॥५॥
॥ सखि हे श्यामले० ॥

मदधरसीधुसुधारससंवदनेन समुन्मदचेतनम् ।
मोदयितुं परिकुञ्चितलोचनसीत्कृतिचयकृतचेतनम् ॥६॥
॥ सखि हे श्यामले० ॥

बहुविधसुरतकलाचतुरप्रियपरितोषकनिजकौशलम् ।
दर्शयितुं परिभावनतत्परमथ मिलितं रसविह्वलम् ॥७॥
॥ सखि हे श्यामले० ॥

तदिति सखीमनुराधिकया परिगीतमनोरथपुञ्जकम् ।
मुदितसरस्वतिसरभसभाषितमस्तु विषयरतिभञ्जकम् ॥८॥
॥ सखि हे श्यामले० ॥

---

१. क—मम

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्रसूनचयनच्छलादथ सखीजनैर्निर्गता
विवेश हरिमीक्षितुं मदनजीवनं काननम् ।
प्रियं परिविचिन्वती किमपि पुष्पकं चिन्वती
चिरं चकितलोचना तरुतले च बभ्राम सा ॥४५॥

अथापूर्णं स्वर्णच्छविभिरभिवीक्ष्याखिलवनं
खगादीनुन्मत्तानपि मधुपमालाः प्रचलिताः ।
अथाकस्मादात्मन्यपि किमपि जाताकुलतया
हरिः त्यक्त्वा खेलां चिरमकृततन्मूलमृगयाम् ॥४६॥

ततो रूपलावण्यसीमां किशोरीं
सुदूरे समालोक्य काश्मीरगौरीम् ।
स्खलद्बर्हमौलिर्गलत्पीतवासाः
करभ्रष्टवेणुः पपाताप्तमूर्च्छः ॥४७॥

ततो मन्दस्पन्दं नवजलदवृन्दं तनुरुचा
निनिन्दन्तं राजद्वदनमरविन्दं विदधतम् ।
तथाभूतं सापि प्रियमभिसमीक्ष्यान्तिकगता
करस्पर्शेनोन्मीलितदृगिति राधा स्मितमुखी ॥४८॥

अथ तं प्राणसुहृदं विचिन्वन् वीक्ष्य विह्वलम् ।
लुठन्तं भूतले प्राह श्रीदामा[1]स्नेहकातरः ॥४९॥

गता दूरे गावो दिनमपि तुरीयांशमभजद्
वयं क्षुत्क्षामाः स्मस्तव च जननी वर्त्मनयना ।
अकस्मात्तूष्णीके सजलनयने दीनवदने
त्वयि त्यक्त्वा खेलां नहि नहि वयं प्राणिणिषवः[2] ॥५०॥

अथ सख्या पटीप्रान्तमृष्टवक्त्रः स मोहनः ।
स्मारं स्मारं प्रियामेतां सगद्गदमिदं जगौ ॥५१॥

---

१. ख—सुवल ।
२. (i) क—प्राणिषिषवः, ख—प्राणिशिषवः ।
(ii) पद्योऽयं राधासुधानिधिस्तोत्रस्य २२८ तमे स्थानेऽपि किञ्चिद् परिवर्तनेन सह प्राप्यते ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

देशी[1]वराडीरागेण गीयते ॥११॥

*स्तबकयुगमुन्नतं वहति रससम्भृतं मदनमदराशिसुखसारम् ।
क्षिपति रसलोभिनं भ्रमरमनुयायिनं दोलयति पल्लवमुदारम् ॥१॥

सखे हेमवल्ली क्वापि पतिताद्य मम दृष्टिम् ।
चलति ललिताङ्ग तं मदनमदमन्थरं किरति मयि किमपि रसवृष्टिम् ॥ध्रु०॥

अनुतिमिरभावतो विमलविधुमण्डलं तत्र रसलहरिकृतदोलम् ।
द्वितयविकचोत्पलं[2] गरलमधुवर्षिणं नर्त्तयति मुग्धमृगलोलम् ॥२॥
॥ सखे हेमवल्ली० ॥

अरुणकमलद्वयं किमपि नवकोमलं गुञ्जदलिपटलमविरामम् ।
रुचिरशशिमण्डलं ललितरुचिबिभ्रती दर्शयति मूलमभिरामम् ॥३॥
॥ सखे हेमवल्ली० ॥

द्वितयमभितो महामधुररुचिकन्दलं दोलयति कोमलमृणालम् ।
स्फुरदमृतचन्द्रिकां किरति रतिदायिनी काममुपनयति विकरालम् ॥४॥
॥ सखे हेमवल्ली० ॥

यदि निकटमागता वदति मृदुलीलया त्वमसि मम[3] नीलमणिशाखी[4] ।
प्रियसुहृदये तदा भवति मम चेतना स्थातुमहमहह घनदुःखी ॥५॥
॥ सखे हेमवल्ली० ॥

अनुसुतनुमध्यतः कमपि दधति भरं चित्रमिव चकितमिह दृष्टा ।
प्रणयसुखवर्षिणी मम हृदयकर्षिणी नैव बत भवति विधिसृष्टा ॥६॥
॥ सखे हेमवल्ली० ॥

---

१. ख—देश ।
२. ख—विकषोत्पलं ।
३. ख—वर ।
४. ख—शाखा ।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

स्थलनलिनबन्धुजीवकतिलकसुन्दरीकुन्दकलिपङ्क्तिरदहारम् ।
इह हि घनकानने व्रततिगृहकोटरे विचिनु मम जीवतनुसारम् ।।७।।
।। सखे हेमवल्ली० ।।

प्रियसुहृदि राधिकारूपमुपदेशतो मधुमधुरगीतकमनीयम् ।
रसमयसरस्वतिभणितमिदमद्भुतं गाय बत परमरमणीयम् ।।८।।
।। सखे हेमवल्ली० ।।

उत्तिष्ठ मा कुरु शुचं चल मन्दिराय
धेनूः समाहूय महामुरलीरवेण ।
प्रायो व्रजे वसति कापि विमोहिनी ते
नो दुर्लभापि भविता बुध ! माकुलीभूः ।।५२।।

इत्थं प्रियस्य सुहृदो वचनामृतेन
किञ्चित् स्थिरीकृतमतिर्भवनं प्रविष्टः ।
नाति प्रफुल्लमुखवेदितया जनन्या
संलालितो निशि हरिर्न जगाम निद्राम् ।।५३।।

विद्धं तीक्ष्णशिलीमुखैर्मृगदृशोपाङ्गैरुदीर्णैश्चिरं
चूर्णीभूतमहो पयोधरगिरिद्वन्द्वेन वर्द्धिष्णुना ।
रोमाली भुजगेन दष्टमपतन्नाभिह्रदे मन्मनो
राधाया इति वर्णयन् परिजनैः सास्रो हरिः पातु वः ।।५४।।

इति श्रीसङ्गीतमाधवे राधागोविन्दमिथो दर्शनोत्सवो नाम
चतुर्थः सर्गः ।।४।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पञ्चमः सर्गः

अथोत्तुङ्गं शृङ्गं निजदयितगोवर्धनगिरेः
समारुह्याशेषव्रजनिलयविन्यस्तनयनः ।
विलोक्य श्रीदामा किमपि वृषभानोर्गृहमणिं
कराङ्गुल्या सम्भावितहृदयचोरिः स मुमुदे ॥५५॥

तदारभ्य क्षुभ्यद् हृदयमति लुभ्यत्सुविधुरं
दधानो राधायाः स्फुरदधरसीधु स्वदयितम् ।
व्रजन्तीमेकान्ते व्रजनगरवीथ्यां मधुपतिः
विलोक्य प्रेयस्याः प्रियसहचरीं प्राह कृपणः ॥५६॥

कर्णाटरागेण[१] गीयते ॥१२॥

विनिवेदितबहुदुःखभरेण निरुत्तरहेलनयानाम् ।
सम्मुखतरमुपयातवता कृतकटुतरवचनवितानाम् ॥१॥

ललिते श्रीवृषभानुकिशोरीम् ।
रमयमथा[२]द्भुतकेलिमनोरथमुदितमनोमणिचोरीम् । ध्रु० ।

कलितपटाञ्चलमतिमदनाकुलमनसा मौक्तिकदन्तीम् ।
मुञ्च मुञ्च चटुलेति विभङ्गुरभ्रूलतिकं निगदन्तीम् ॥२॥
॥ ललिते श्रीवृषभानु० ॥

१ ख—कर्णाटक
२ ख—महाद्भुत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अर्पयता मणिवेणुमथापुरमुद्रिकमपि पदमूले ।
पदहृतिदूरनिरासकरीमपि मयि विमुखीमनुकूले ॥३॥
॥ ललिते श्रीवृषभानु० ॥

रदतृणकाकुशतैकपरेण निरन्तर नहि नहि भाषाम् ।
पतितवताचरणे किमपीङ्गितमृदुमृदुहासविलासाम् ॥४॥
॥ ललिते श्रीवृषभानु० ॥

नीतवता घनपुलकितभुजमवलम्ब्य निभृतनवकुञ्जम् ।
रतितरसाकुलितां च मया भजता त्वतिकौतुकपुञ्जम् ॥५॥
॥ ललिते श्रीवृषभानु० ॥

दृढमुपगुह्य मृषा रुदतीमपि पिबताधररससारम् ।
कुचकोरकनखलेखपरेण विपाचितरुचिरविकारम् ॥६॥
॥ ललिते श्रीवृषभानु० ॥

करयुग[1]नीविनिवेशयता बहुकृतविनिरोधप्रयासाम् ।
सुरतमहारसरङ्गपरेण समुन्मदमदनविकाशाम् ॥७॥
॥ ललिते श्रीवृषभानु० ॥

इति मधुसूदनरसमयवैभवभाववता[2] रमणीयम् ।
मुदितसरस्वतिगीतमिदं रसभाववनां कमनीयम् ॥४॥
॥ललिते श्रीवृषभानु० ॥

प्राणास्तवैव वपुषा सह मे मृगाक्षि
रत्नोज्ज्वलां मुरलिकां नय मुद्रिकां च ।
आस्तां परं सकृदपि स्मरवेपिताभ्यां
दोर्भ्यां तव प्रियसखीं दृढमाश्वजामि ॥५७॥

कथं घनरसप्रदो नवलतां तडिज्ज्योतिषं
कथं नु मधुसूदनस्त्यजतु तादृशीं पद्मिनीम् ।

१. ख—करयुगलीं
२. ख—भावनया

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कथं च नहि सङ्गतो भवतु राधया माधव-
स्तदद्य ललिते यथोचितविचारमेवाचर ॥५८॥

व्रजनृपतिकुमारे कोटिकन्दर्पसारे
वदति विकलमेवं सहसागूढ[1]भावा ।
स्वपरपुरुषसङ्गे सर्वदा सा विरक्ता
भवति परमसाधामत्सखी ते विमुग्धा ॥५९॥

अथ वर्त्मनि लोकसङ्गते विमृषन्तं बत मार्गतो हरिम् ।
ललितापि तदैव राधिकामिदमूचे समुपेत्य सादरम् ॥६०॥

गुर्ज्जरीरागेण गीयते ॥१३॥

सन्ततमभिलाषककमलादिकसकलविलासिनिवृन्दम् ।
चिरमपहाय तवैव पदाम्बुजपरिमलकृतरतिबन्धम् ॥१॥

राधे भज व्रजराजकुमारम् ।
सत्वरमभिसर मम वचने ननु मा कुरु मनसि विचारम्[2] ॥ध्रु०॥
पथि पथि तव दासीजनपदतलविलुठितमौलिशिखण्डम् ।
साश्रुविलोचनमवनीलोचनमतिपाण्डुरमृदुगण्डम् ॥२॥
॥ राधे भज व्रज० ॥

विषमकुसुमशरशरभरजर्ज्जरमतिसुकुमारशरीरम् ।
निरवधि तव सङ्गमरसलालसमानसमवशमधीरम् ॥३॥
॥ राधे भज व्रज० ॥

अद्भुतकोटिमनोभवमोहनगुणलावण्यनिधानम् ।
तव पददासतयार्पितवन्तं स्ववपुर्गलदभिधानम् ॥४॥
॥ राधे भज व्रज० ॥

१. क—प्राहमागूढ
२. ख—विकारम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

निभृतनिकुञ्जतले तव नागरि नामपदानि जपन्तम् ।
ध्यायन्तं तव रूपविलासं सासुतया निवसन्तम् ॥५॥
॥ राधे भज व्रज० ॥

त्वयि सहजानुरागरसविह्वलमपि न स्पृशति नु गेहम् ।
अनलङ्कृतमार्जितकलितोज्ज्वलपीताम्बरवरदेहम् ॥६॥
॥ राधे भज व्रज० ॥

प्राणकोटिसुनिराजितसुललितत्वत्पदनखरुचिलेशम् ।
तव परिरम्भणरसपरमाशा धृतजीवनमनिमेषम् ॥७॥
॥ राधे भज व्रज० ॥

श्रीवृषभानुसुतापदजीवनरसदसरस्वतिगीतम् ।
जनयतु तद्रसमूर्त्तिपदाम्बुजभावमुदारमधीतम् ॥८॥
॥ राधे भज व्रज० ॥

अयि किमपि कुरु त्वं रक्ष लोकं च धर्मं
मम तु सखि गतैव प्रायशो जीविताशा ।
मरकतमणिभासा तेन जाम्बूनदाभां
तव यदि नहि वीक्ष्ये भूयसीमङ्कभूषाम् ॥६१॥

मज्जंस्तत्कुचकुङ्कुमाङ्कयमुनातीर्थोदके रेणुभिः
तस्याः श्रीपदपङ्कजाङ्कितभुवः सर्वाङ्गमागुण्ठयन् ।
तद्वार्य्येव गतागतिं विरचयन्नित्यं स दृप्तेक्षणः
कोपि श्यामकिशोरको व्रजपुरस्त्रीलम्पटः पातु वः ॥६२॥

इति श्रीसङ्गीतमाधवे राधासख्यनुनयो नाम पञ्चमः सर्गः ॥५॥

○ ○ ○

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

षष्ठः सर्गः

अतिमधुरविचित्रभ्रूलतानर्त्तनेन
प्रहितसमरसख्यं खेलयन्ती मनोजम् ।

ललितगतिविलासैर्नूपुरक्वाणरम्यैः
क्षणमपि नहि राधा माधवे धैर्यमाधात् ॥६३॥

बहिः किं निर्य्यायादथ[1] न भविता तद्गुरुजनः
किमु स्मित्वा स्मित्वा मयि कुटिलदृष्टिं रचयिता ।
विलम्ब्य स्थानादप्यधिककपटेन प्रियसखी-
रथापृच्छन्मुग्धा नवघनरुचिः कोयमिति माम् ॥६४॥

इति बहुविधचिन्ताव्याकुलो गोकुलेन्दुः
श्रमजसलिलबिन्दुश्रीमुखो भक्तबन्धुः ।
व्रजपुर उपहूतामुत्सवे क्वापि यान्तीं
रहसि निजसखीभिर्वीक्ष्य राधां जगाद ॥६५॥

श्यामगुर्ज्जरीरागेण गीयते ॥१४॥

देहि विवृत्य कृपामृतदृष्टिम्[2] ।
शमय मम स्मरशरशिखिवृष्टिम् ॥१॥

राधे व्रजपतिनन्दकुमारम् ।
परिचिनु मामधिगतरससारम् ॥ध्रु०॥

दर्शय हास्यमनोहरमास्यम् ।
वितर सुधाकरकोटिषु हास्यम् ॥२॥ राधे व्रजपति० ॥

त्वयि रुचिदायिनि सुचिरधृताशम् ।
किमपि समादिश निजपददास्यम् ॥३॥ राधे व्रजपति० ॥

तव कुचपरिरम्भणरसलोलम् ।
मामवलोकय गलितनिचोलम् ॥४॥ राधे व्रजपति० ॥

निजकरगतताम्बूलमखण्डम् ।
वितर कृपा यदि विकसितगण्डम् ॥५॥ राधे व्रजपति० ॥

---

१. ख—निर्य्यायादपि
२. क—वृष्टिम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अभयमलज्जमनङ्गशचेष्टम् ।
कथमिव पश्यसि मम न कृतेष्टम् ॥६॥ राधे व्रजपति० ॥

भवतु ममाद्य शुभा रजनीयम् ।
तनु तव रतिसुखमनुभवनीयम् ॥७॥ राधे व्रजपति० ॥

इति रससारसरस्वतिगीतम् ।
रचयतु हरिपदरसमुपनीतम् ॥८॥ राधे व्रजपति० ॥

वद बहुतररूक्षं पश्य मां शोणदृष्टया
कुरु चरणप्र[1]हारं गच्छ वाचावहेलम् ।
प्रमदमदनमाद्यन्मुग्धबाह्यान्तरात्मा
न खलु न खलु कृष्णो राधिके त्वां जहाति ॥६६॥

नहि नृपतिभयं मे नो पुनर्लोकलज्जा
न च मम कुलशीलख्यातिरक्षाद्यपेक्षा ।
तव कुटिलकटाक्षैः तीक्ष्णबाणैः क्षतोहं
तव कुचपरिरम्भेणैव जीवामि राधे ॥६७॥

अथ प्रेमरसागाधराधासाधारणक्रमात् ।
प्राह प्रियसखीमेतदुपशृण्वति माधवे ॥६८॥

मालवगौडारागेण गीयते ॥१५॥

भुवनविदितपरिशुद्धकुलद्वयमण्वपि न धृतकलङ्कम् ।
मम च सुविश्रुतशीलमहोदयमवधारय गतशङ्कम् ॥१॥

सखि हे वारय व्रजपतिसूनुम् ।
नहि परपुरुषे मम मतिरुदयेद्यदि कलये निशि भानुम् ॥ध्रु०॥

गोकुलभद्रकृतोस्य न युज्यत इयमतिदुर्णयलीला ।
रागजनष्टगणेपि विराजति किमु मतिरसिकसुशीला ॥२॥
॥ सखि हे वारय० ॥

---

१. छन्दसि दोषः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तिष्ठति पथमवरुध्य तथाञ्चलमपि कलयितुमनुसारी ।
सकलमिदं विनिवेदय निजसुतमवतु व्रज[१]पतिनारी ॥३॥
॥ सखि हे वारय० ॥

नास्य कृते विदधामि सुखं सखि यमुनानीरविगाहम् ।
किमफलचाटुशतं कुरुते मयि यदतिनियमकठिनाहम् ॥४॥
॥ सखि हे वारय० ॥

वृन्दावनविपिनेऽतिप्रफुल्लितनवनवमल्लिवितानम् ।
प्रतिदिनमहमुपयामि कुसुमचय इह प्रतिषेधति यानम् ॥५॥
॥ सखि हे वारय० ॥

निद्रितवति जननिकरे यदि मम गृहमयमेति निशान्ते ।
अहमति जागरणेन कृतस्थिरनिरपि भवितास्मि निशान्ते ॥६॥
॥ सखि हे वारय० ॥

यदि नहि नहि वचनेन कथञ्चन धास्यति सखि मम वाहम् ।
कलयसि यदि मम सत्यमहो सखि मोहतति त्वरनाहम् ॥७॥
॥ सखि हे वारय० ॥

इति रससारसरस्वतिवर्णितराधावचनविलासम् ।
अतिचतुरायितचारुतरं चिरमुपगायत सविलासम् ॥८॥
॥ सखि हे वारय० ॥

कथय सखि यशोदानन्दनं राधिका ते
पतति चरणमूले मुग्धतां मोक्षयस्व ।
स्मरवशकुलजाया: केलिरङ्गप्रसङ्गा-
द्विरम कुरु सराम: कानने नित्यखेलाम् ॥६९॥

श्रवणेन निपीय राधिकारसवैदग्ध्यगभीरभारतीम् ।
ललिताथ जगाद निर्भरप्रणयानन्दरसातिपेशलम् ॥ ७० ॥

१. ख—व्रजेश्वरी

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुर्ज्जरीरागेण गीयते ॥१६॥

निपतति चरणे गुञ्जाभरणे गोकुलराजकुमारे ।
विधुमुखि भाग्यं परमविमृग्यं किमपरमिह संसारे ॥१॥

श्यामशरीरे मदनाधीरे न कुरु हठं सखि राधे ॥ध्रु०॥
निरवधि सदये दुःखितहृदये प्रकटय करुणं स्तोकम् ।
न गणय लोकं नाशय शोकं कुरु सस्मितमवलोकम् ॥२॥
॥ श्यामशरीरे० ॥

परिहृतसकलं प्रियमतिविकलं घनघनकृतनिःश्वासम् ।
प्रतिपदमधुरं स्मरशरविधुरं जीवय निजपददासम् ॥३॥
॥ श्याम शरीरे० ॥

मा वद परुषं कुरु मयि न रुषं विरचय न भ्रूभङ्गीम् ।
हरिमुखकमले नवरसविमले खेलय लोचनभृङ्गीम् ॥४॥
॥ श्यामशरीरे० ॥

दर्शय वदनं विकसितमदनं राकाचन्द्रमनोज्ञम् ।
वञ्चय न जनं निजमतिसुजनं ललितानङ्गरसज्ञम् ॥५॥
॥ श्यामशरीरे० ॥

व्रजपतितनये कृतबहुविनये त्रिभुवनमोहनरूपे ।
नेयमुपेक्षा तव शुभकक्षा जाग्रति मन्मथभूपे ॥६॥
॥ श्यामशरीरे० ॥

निगद रहस्यं दयितवयस्यं परिरचयेङ्गितमल्पम्
भ्रमदलिपुञ्जं त्वनु नवकुञ्जं कुरु सखि किसलयतल्पम् ॥७॥
॥ श्यामशरीरे० ॥

श्रुतिहरिचरिता मधुरिमभरिता मञ्जुलरसमञ्जूषा ।
रसदसरस्वति वागतिमधुमति भवतु तव श्रुतिभूषा ॥८॥
॥ श्यामशरीरे ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

त्रससि किमु सखि त्वं नैव पीताम्बरात्तो
कुचयुगमपरस्य स्पर्शयोग्यं कथञ्चित् ।
वदनकमलगन्धैः कृष्णभृङ्गोयमङ्घ्रौ
भ्रमति तव कथं वा मन्यतां कारणानि ॥७१॥

कोयं द्वारि विधुः प्रियालि तदसावालम्बतामम्बरं
बाले नायक एष ते किल तदा हारान्तरे तिष्ठति ।
मुग्धे माधव एष हन्त वितनुर्न्यस्तं कथं नो भवेत्
राधाया इति वाक्छलेन सहसाश्लेषी हरिः पातु वः ॥७२॥

इति श्रीसङ्गीतमाधवे चतुरराधेशो नाम षष्ठः सर्गः ॥६॥

ooo

सप्तमः सर्गः

गतायां राधायां द्रुतपदमपि स्वीयभवनं
सखीं वा तत्प्रेष्ठं तदनु रसमाभाष्य किमपि ।
प्रविष्टः श्रीवृन्दावनविपिनमानन्दसदनं
स गोविन्दो नाविन्दत रुचिमपीन्दोरुदयतः ॥७३॥

न चन्द्रे निस्तन्द्रे न च परमसान्द्रे मलयजे
न कालिन्दीनीरानिलकमलमालासु स हरिः ।
जलार्द्रं स्वं पीताम्बरमपि तनौ न्यस्य न जहौ
मनाग्बाधां राधाविरहदहनज्वालविकलः ॥७४॥

लोलत्पल्लविनीं विलोक्य मधुपोद्धुष्टां[1] विदूरे[2] लतां
राधामाह्वयतीति हर्षविगलत्पीताम्बरो धावितः ।
कालिन्दीकलहंसकोमलकलध्वानेन लोलेक्षणो
वारम्वारमभूत्प्रतापतिमतिर्वृन्दावने माधवः ॥७५॥

---

१. ख—मधुपो दृष्ट्वा
२. ख—च दूरे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वक्षोजं स्तबके मुखं हिमकरे नेत्रे कुरङ्गीगणे
नृत्यत्केलिकलाप एव कवरीं नालीमुदो कन्दलीम् ।
इत्थं किञ्च न तत्र तत्र कथमप्यध्यास्य सन्धूक्षितो
राधाया ललिताङ्गकानि स हरिर्बभ्राम वृन्दावने ॥७६॥

अथ कुचपरिरम्भचुम्बबिम्बाधररसपानरसोत्सवे निमग्नः ।
किमपि हृदि समाहिते पिकालीमदकलितावरुतैः प्रमुग्ध आसीत् ॥७७॥

ततः कमलपत्राक्षः कदम्बतलकेतनः ।
विललापातिकरुणं वाष्पगद्गदया गिरा ॥७८॥

श्रीरागेण गीयते ॥१७॥

समभिलषाम्यहमीक्षितुमुज्ज्वश्रीमुखहिमकरबिम्बम् ।
नयति च हन्त तदन्यदिशं प्रतिनिहितचेलमविलम्बम् ॥१॥

हरि हरि कथमिह जीवमिदानीम् ।
राधानवदति मयि बहुवादिनी किमपि मितामपि वाणीम् ॥ध्रु०॥

सस्पृहमहमभियामि निकटमियमहह चलत्यतिदूरम् ।
न च शृणुते मम दुःखनिवेदनमपि पश्यति न क्रूरम् ।
॥ हरि हरि कथमिह० ॥

यदि कुसुमावचयायैता वनमिह कुसुममहो चित्रम् ।
नैवास्पृशदपि मदुपकृतं बत किमिदं मधुरचरित्रम् ॥३॥
॥ हरि हरि कथमिह० ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सहजह्रिया लवमपि नोन्नमयति सुन्दरहासमुखेन्दुम् ।
किं मम जनितमहं नवगाहे सान्द्ररसामृतसिन्धुम् ।।४।।
।। हरि हरि कथमिह० ।।

निरवधिदुःसहमन्मथलुब्धकविद्धमनाः प्रलपामि ।
न प्रसीदति वृषभानुकिशोरी किं करवै क्व नु यामि ।।५।।
।। हरि हरि कथमिह० ।।

मणिमयमुद्रिकयातिमनोहररत्नोज्ज्वलनिजवंश्या ।
परमप्रलोभनमहह कृतं बहु मनुते नैव वयस्या ।।६।।
।। हरि हरि कथमिह० ।।

हा हा जीवित न त्रपसे त्वं कथमिह दुश्चरितेन ।
क्षणमपि तां रसधाम विना यत्तिष्ठसि परमसुखेन ।।७।।
।। हरि हरि कथमिह० ।।

इति विरहातुरहरिपरिदेवनरञ्जितगीतमुदारम् ।
गायत सरससरस्वतिविरचितमनुपमरसनिधिसारम् ।।८।।
।। हरि हरि कथमिह० ।।

पुरो राधा पश्चादपि च राधा तत इतः
स्फुरन्त्येषा सम्यग्वसति मम राधान्तरगता ।
अधश्चोर्ध्वं राधा विटपिषु च राधा किमपरं
समस्तं मे राधामयमिदमहो भाति भुवनम् ।।७९।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कर्ह्याकस्मिक उद्भविष्यति मृगीनेत्रे तवात्रागमो
दृष्ट्वा मामतिकातरं च करुणाकार्यंकरी भाविनि ।
उत्थायास्मि कदा च वाग्भिरमृतैराश्वास्य धृत्वा करे
हा राधे वृषभानुनन्दिनि कदा त्वामङ्कमारोपये ॥८०॥

विना प्राणान् देहः कथमिह भवेत् को नु सलिलं
विना मीनश्चन्द्रो विलसति विना को नु रजनीम् ।
विनान्नं का प्राणस्थितिरहह कृष्णोपि नितरां
विना राधां प्रेमोन्मदमदनलीलारसनिधिम् ॥८१॥

योगीन्द्रा मृगयन्ति यत्पदरजस्तेनापि यन्मृग्यते
विश्वं येन विमोहितं चलदृशा तस्यापि यन्मोहनम् ।
पूर्णानन्दमयोपि यद्रसलवास्वादेन धन्यायते
तद्धाम स्फुटचम्पकच्छवि चिरं राधाभिधं पातु वः ॥८२॥

इति श्रीसङ्गीतमाधवे मुग्धमाधवो नाम सप्तमः सर्गः ॥७॥

अष्टमः सर्गः

अथ व्यरचयदुच्चकैश्चतुरचक्रचूडामणिः
विचिन्त्य रुचिरं चिरं मदचलच्चकोरीदृशम् ।
तदुच्चकुचकाञ्चनाचलमुदंचितेनोरसा
निपीड्य महिमोच्चयं विरचयन्नुपायावलीम् ॥८३॥

कदाचित् कालिन्दीजलविलसदिन्दीवरवने
निलीनो मज्जन्त्या मदकलभलीलो मधुपतिः ।
अनर्घ्यं राधाया विवृतकुचकुम्भोभयतटी
परीरम्भं रम्भाविजयि लसदूरावलभत ॥८४॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पुरः स्थित्वैकान्ते रचितमथ निर्वाप्य सपदि
प्रदीप्तं फूत्कारैः सतमसि गृहे नीलवसनः ।
विमुद्यास्यांभोजं न परिधृतरत्नाभरणकः
कदाचिद्राधाया अकृत परिरम्भोत्सवमसौ ।।८५।।

क्वचन नवनिकुञ्जे कृष्ण आलक्ष्य सख्या
तरलितमतिखेलां कृष्यमाणः कदाचित् ।
तदति निभृतवल्लीमन्दिरान्तर्निलीनां
सहसि तमुपगुह्यानन्दकाष्ठां स लेभे ।।८६।।

नवयुवतिसुवेशं कारयित्वा कदाचित्
परमचतुरसख्या प्रेषितं प्राणनाथम् ।
तदतिमधुररूपेणोच्छलत्प्रेमसिन्धुः
स्वनिकटमुपयातं प्राह राधा विमुग्धा ।।८७।।

रामकिरीरागेण गीयते ।।१८।।

नीलनलिनदलकोमलमुज्ज्वलमङ्गमधिकसुकुमारम् ।
मोहनरूपमिदं तव वल्लवि हरति ममान्तरसारम् ।।१।।

विधुमुखि का त्वमहो मधुरे ।
प्रियसखि भव मम चारुतरे ।।ध्रु०।।
केयमहो तव विश्वविमोहनललितापाङ्गत्रिभङ्गी ।
जनयति खञ्जनगर्वविभञ्जनमतिभयमेति कुरङ्गी ।।२।।
।। विधुमुखि० ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

कस्य सुतासि चलन्मणिकुण्डलमण्डितमृदुलकपोले ।
मत्तमतङ्गजगामिनि नवरतिकेलिकलासुविलोले ।।३।।
।। विधुमुखि० ।।

मा कुरु वञ्चनमिह सखि किञ्चन तव पृच्छामि रहस्यम् ।
त्वामपि चकितमुदैक्षत किमु हरिरिति मम वाच्यमवश्यम् ।।४।।
।। विधुमुखि० ।।

लोचनतापहरे सुखवर्षिणि देहि निविडपरिरम्भम् ।
त्वत्प्राप्तयैकरसेन मनो मम भजति हरेरुपलम्भम् ।।५।।
।। विधुमुखि ।।

हास्यमहो तरलास्यमहो तव वचनमहो मधुधारा ।
स्नानशयनभोजनगमनादिषु विहर मया त्वमुदारा ।।६।।
।। विधुमुखि ।।

इति वरयुवतिवेशधरो हरिरतिरससिन्धुमगाधाम् ।
पुलकितबाहुसहासममोदत चिरमुपवाह्य स राधाम् ।।७।।
।। विधुमुखि ।।

मुग्धसरस्वतिगीतमहाद्भुत माधवकेलिविलासम् ।
कण्ठतटे कुरुतातिरसं किल शिथिलयुवतिभुजपाशम् ।।८।।
।। विधुमुखि० ।।

वितत्य निजमुज्ज्वलं कपिशमुत्तरीयं तले
तदेक दिशि वंशिकामपि निधाय राधेरितः ।
विचित्रकुसुमान्यपातयत नीपमारूढवान्
हृदा किमपि भावयन् रसिकशेखरः कर्हिचित् ।।८८।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सख्या तत्र पुरस्थितां कुलवधूसम्मोहिनीं श्रीहरेः
वंशीमात्महिताय गोपय तदित्युक्ते करे न्यस्यताम् ।
नीपैस्तैः परिमण्डितां निजपटाच्छन्नां च शाखान्तरे
लीनां वीक्ष्य ततोऽवतीर्य्य सहसा यान्तीमवारुद्ध सः ॥८९॥

अथातिमधुरानङ्गरङ्गभङ्गीगभीरया ।
गिरामदस्खलितया प्राह राधां रसाकुलाम् ॥१०॥

श्यामगुर्ज्जरीरागेण गीयते ॥१६॥

मणिमयवेणुमुदक्षिपदथ[1] मम नवसङ्कचोनमुदारम्[2] ।
नीपमनल्पकमपि च सुदूरत इयमकृतातिविसारम् ॥१॥

केयं व्रजपुरचतुरसुचोरी ।
भ्रमति वने मम ललितकिशोरी ॥ध्रु॥
मुञ्च ममाञ्चलमिति बहुचञ्चललोचनकमलविभङ्गी ।
निगदति हन्त मृषा परिरोदिति कलितमहाद्भुतरङ्गी ॥२॥
॥ केयं व्रजपुर० ॥

सोढुमखिलमथ बत कञ्चुकगतद्वितयकदम्बमुदारम् ।
किमु न ददाति विशङ्कमथापि चतुरयति विविधविकारम् ॥३॥
॥ केयं व्रजपुर० ॥

प्रथयति बत चतुरत्वमहो वरयुवतिश्छद्मतीयम् ।
इदमधुनापि श्लेष्य पृथुकुचभर इति कथमिव कथनीयम् ॥४॥
॥ केयं व्रजपुर० ॥

१. ख—सुदक्षिपदथ
२. ख—सुदारम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

धेनुगणो मम दूरगतो वत विकलमखिलमपि मित्रम् ।
द्रुतमर्पय मम परमरसप्रदकुड्मलयुगमतिचित्रम् ॥५॥
॥ केयं व्रजपुर ॥

तव यदि निश्चय एष न देयं हरिरपि दृढमभिमानी ।
अस्य कृतेपिचह्रास्यति जीवनमिति मम नानृतवाणी ॥६॥
॥ केयं व्रजपुर० ॥

इति हठपाठितनवकञ्चुकपटउल्लसितोवनमाली ।
लब्धमहो इति विविध मोदत[1] राधाकुचरतिशाली ॥७॥
॥ केयं व्रजपुर० ॥

इतिरससारसरस्वतिवर्णितमाधवमधुरविलासम् ।
विशतु गुरोः पदभक्तिपरश्चिरसज्जलभावविकाशम् ॥८॥
॥ केयं व्रजपुर० ॥

पाणिभ्यां पिदधत्कदापि सुदृशः पश्चाद्गतो लोचने
स्मेरस्तत्करपल्लवेन ललिते मुञ्चेति चोक्ता धृतः ।
सुप्तायाश्च शनैः शनैर्जघनतः क्षिप्तो रसश्चाम्बरं
संश्लिष्य प्रलिखन्नखैः स मुमुदे बोधेऽपि मीलद्दृशः ॥९१॥

राधेहं ललितागतास्मि कपटादुक्तेति पत्रावलीं
तद्वासाः कुचयोश्चिरं विरचयन्नापीडयन्नुन्मदः ।
तीक्ष्णाग्रैर्विलिखन्नखैश्च धृतपुंभावोति मुग्धं हसन्
राधायाः सखि किं किमेतदिति तद्वाण्या[2] हरिः पातु वः ॥९२॥

इति श्रीसङ्गीतमाधवे रसोद्धतमाधवो नामाष्टमः सर्गः ॥८॥

१. क—ममेदत
२. क—वाण्ध

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवमः सर्गः

एकदा विरचिताद्भुताक्रमं
माधवेन रमिता यथासुखम् ।
राधिकारसनिमग्नमानसा
शोकभागिव सखीमभाषत ।।९३।।

मालवगोडारागेण गीयते ।।२०।।

क्वापि गतेखिलगृहजन एकल ईदृशि मन्दिरगायाम् ।
मम समकक्षमलक्षित आगत आकुलबाहुलतायाम् ।।१।।

सखि हे शृणु मम गतदिनवृत्तम् ।
हरि हरि धूर्त्तशिरोमणिहरिणा दुःखं बत बहुदत्तम् ।।ध्रु०।।
द्वारि तदैव बहिर्निजगृहपतिमभिसमुदीक्ष्य विहस्ता ।
प्रविश यमिममन्तर्गृहमहमात्त स कङ्कणहस्ता ।।२।।
।। सखि हे शृणु ।।

तत्र महामदनोन्मदमतिरयमारभतातिकुचेष्टाम् ।
अस्य स नूपुरकाञ्चि मदीय ननेति समध्वनिदुष्टाम् ।।३।।
।। सखि हे शृणु० ।।

कञ्चुकमच्छिददलिखदुरोरुहमथनखरेण निकामम् ।
दृढपरिरम्भणमकृत तथाधरदंशमहो अविरामम् ।।४।।
।। सखि हे शृणु ।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

शिथिलितनीविमवेष्टत दुद्ध ुरमदनमदोन्मदभावम् ।
कथमपि नाकरवं करवाणमहह न नेति च रावम् ।।५।।
।। सखि हे शृणु० ।।

चञ्चलतरमथ पूर्णमनोरथमतिकातरमृदुवाचम् ।
विरचितकाकुक्रियां रससंवृततनुरतिनीरसरोचम् ।।६।।
।। सखि हे शृणु० ।।

अहमपि विपुलनिचोलसुसंवृतसुरतसुलक्षणदेहम् ।
आशु गमनमपनीय भुजं गृहकोणगता विरतेहम् ।।७।।
।। सखि हे शृणु ।।

मन्दतमसि वरभङ्कृतिनूपुरमस्य बहिः प्रतियाने ।
कोऽयमिति श्रुतजनगदिताऽपत महति भीतिविताने ।।८।।
।। सखि हे शृणु ।।

इति नवमधुररसामृतशेवधिराधावचनविलासम् ।
कलयितुमहह सरस्वतिमानसमनुदिनमिह विधृताशम् ।।९।।
।। सखि हे शृणु ।।

कृता दृष्टिः क्रूरा कटुवचनकोटिर्विरचिता
हसत्येवोन्मत्तः कलयति पुनर्मां तत इतः ।
अहो धन्यं धन्यं कलितबहुलीलाम्बुजहतिः
क्व यामः किं कुर्म्मः सखि मम किमेतन्निपतितम् ।।९४।।

कटाक्षानाक्षिप्ताः कृतमपि न साकूतललित-
स्मितं नो यत्कामं किमपि भुजमूलप्रकटनम्[१] ।
न चानेन स्वैरं हसितपरिहासादिविहितं
कृतं किं मे गोपीततिषु यदयं खेदयति माम् ।।९५।।

१. ख—भुजमूलं प्रकटितम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

सानन्दं परिचुम्बितु हरि हरि श्रीमन्मुखं नेक्षितं
सम्पीड्योल्लिखितं नखैः स्तनतटं शोभा न सालोकिता।
नीवीदूरमुदासि हन्त न मनाग्दृष्टा तदूरुच्छविः
शोचन्नित्यमलक्षितोपि रमितो राधां हरिः पातु वः ॥९६॥

इति श्रीसङ्गीतमाधवे मुदितराधामाधवो नाम नवम्: सर्गः ॥

○ ○ ○

दशमः सर्गः

भूयोभूयः सुरतसुधया मादयित्वा स राधां
चित्रोपायैश्चतुरतिलको ज्ञातसारल्य[1]भावाम् ।
वृन्दाटव्यां पुनरपि तया रंस्यमानो यथेष्टं
प्रेष्याञ्चक्रे निजमुरलिकाकाकलीमेव कृष्णः ॥९७॥

सापि श्रुत्वा तमथविकला मोहनं वेणुनादं
निष्क्रामन्ती पुनरथ गुरून् द्वारि दृष्ट्वा विशन्ती ।
पूर्वं वज्रायितमपि मनो मार्द्दवं नातिघूर्णंत्
विभ्राणाथ प्रियसहचरीं क्वापि सोत्कण्ठमूचे ॥९८॥

दुःखिवराडीरागेण गीयते ॥२१॥

दिशि दिशि खिद्यलमतिमदविह्वलमवलोकय नटलीलम् ।
तेन मनो मम वादकपुरुषं मनुते नवघननीलम् ॥१॥

१. ख—जातासारल्प

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

प्राणसखि कुरु मम जीवनदानम् ।
त्वरिततर नय माममतिविधुरां यत्र मुरलीकलगानम् ।। ध्रु० ।।

उच्चाटनमतिमोहनमादनमन्त्रमिवातिसुसिद्धम् ।
पठति युवतिजन वैरिमदन इव हृदि कुरुते शरविद्धम् ।।२।।
।। प्राणसखि कुरु० ।।

कस्य मधुरतररसभरिताधरसीधुसुधालहरीयम् ।
ध्वनिरूपिणि मम श्रुतिपुटपूरिणि लुम्पति गृहकरणीयम् ।।३।।
।। प्राणसखि कुरु० ।।

निरवधिहृद्विकलीकुरुते मम जनयति विषमिव गेहम् ।
तत्पदमूले[1] द्रुतमधुनैव हि न्यस्यमिदं निजदेहम् ।।४।।
।। प्राणसखि कुरु० ।।

प्रेममहाम्बुधिरुच्छलितो मम यन्मुरलीरसपाने ।
प्राणाधिकतम एष प्रियो मम परमिह किमपि न जाने ।।५।।
।। प्राणसखि कुरु० ।।

किं मम शीलं कीर्तिकुलं वा का मम गुरुजनलज्जा ।
विषमकुसुमशरविषशरवर्षणजर्ज्जरिता मम लज्जा ।।६।।
।। प्राणसखि कुरु० ।।

चतुरतया यदि नयति न भवती पश्य चलाम्यहमेषा ।
तादृशमेव विलक्ष्य निरङ्कुशमतिमदविह्वलवेशा ।।७।।
।। प्राणसखि कुरु० ।।

१. ख—पदमूलेद्रुत

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

राधापदगतिदीनसरस्वति अन्तर्वहति सदाशाम् ।
स्वप्रियमिथुनमिलनकरणोत्सुकमतिरतिभावविकाशाम् ॥८॥

॥ प्राणसखि कुरु० ॥

दन्ते करोमि तृणकं चरणे पतामि
क्रीतां कुरु प्रियसखि प्रणयेन राधाम् ।
त्वं श्यामसुन्दरकिशोरवरं प्रदर्श्य
मज्जीवितं गतमिवाद्य निवर्तयेथाः ॥९९॥

अयि सखि कतिनोक्तं पूर्वमेतन्मया ते
हरिरयमभिमानी कीदृशो नाद्य जाने ।
भवतु तदपि यामि त्वत् कृते प्राणसारे
प्रथममिदमुदीक्ष्य त्वां ततोहं नयामि ॥१००॥

इति निगद्य सखी सुखदायिनी
हरिमुपेत्य कदम्बतले स्थितम् ।
न परिलोक्य पुरेव कृतादरं
रसिकमौलिमभाषत कातरम् ॥१०१॥

देशाख्यरागेण गीयते ॥२२॥

उदयति शीतलकरे वररामा ।
मुखमुन्नमयति चुम्बितुकामा ॥१॥
राधिका रमते त्वयि माधव ॥ध्रु०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

यदि कलयति तव वेणुनिनादम् ।
गणयति नैव तदा जनवादम् ॥२॥ राधिका रमते०॥

भवति कलितनवमेघविलासा ।
उद्यतकृतपरिरम्भणवासा ॥३॥ राधिका रमते०॥
यदि दृशि निपतति चन्द्रकमाला ।
परमचमत्कृतिमञ्चति बाला ॥४॥ राधिका रमते०॥

लिखति रहसि तव रूपमुदारम् ।
मुहुरिह घटयति निजकचभारम् ॥५॥ राधिका रमते० ॥

वहिरधिगतभवदमृतसुनामा ।
विकल विकलमिव धावति वामा ॥६॥ राधिका रमते०॥

प्रपतति चातितरामतिमुग्धा ।
तव रतिकेलिसमाधिनिरुद्धा ॥७॥ राधिका रमते० ॥

त्वयि परमामृतवपुषि विलग्ना ।
प्रणयसुधारससिन्धुनिमग्ना ॥८॥ राधिका रमते० ॥

इति रसवलितसरस्वतिगीतम् ।
जनयति हरिपदभावमधीतम् ॥९॥ राधिका रमते० ॥

राधा राधेत्यसकृदधुनैवात्र गायन्स्त्वमासीः
किं मामारादहह कलयन् कृष्णदृष्टां स्थितोसि ।
राधायां ते सहजमधुरप्रेमसाम्राज्यलक्ष्मीः
ख्यातैवातो न कुरु कपटं दर्शयास्यं सहास्यम् ॥१०२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

नवनिभृतनिकुञ्जं सोथ सङ्केतयित्वा
दयितसहचरीं तां प्राहिणोद्राधिकायाः ।
स्खलित पदममन्दानन्दवेगात्तयापि
द्रुततरमभिगम्य प्राणसख्यै न्यवेदि ॥१०३॥

नामैवोत्तरलं करोति परमो मत्तं च काञ्चीरवो
राधायाश्चकिताक्षतां प्रकुरुते मुग्धा तदङ्गच्छटा ।
तेनैकान्तगतं चरिष्यति परं चाक्रम्य हृद्बाधते
सा मां त्वं ललिते चलेति निगदन् सास्रो हरिः पातु वः ॥१०४॥

इति श्रीसङ्गीतमाधवे उत्तरलमाधवो नाम दशमः सर्गः[1] ॥

एकादशः सर्गः

अथ विहितविलम्बे दुर्वहश्रोणिबिम्बे ।
परिजनवति राधानाम्नि जीवावलम्बे ।
प्रमदमदनवेगोद्भ्रान्तचेता विचिन्व-
न्नुपनिजगृहमासीन्नीपखण्डे विषण्णः ॥१०५॥

सख्या च नीता गुरुमध्यतोपि
केनापि चातुर्य्यरसेन राधा ।
सङ्केतकुञ्जे मुदितालिपुञ्जे
प्रियं न दृष्ट्वा विकला बभूव ॥१०६॥

कृत्वाथ तस्याः परिसान्त्वनं सखी
सद्यः प्रकोष्ठच्युतकङ्कणायाः ।
गत्वालयाद्वहि कदम्बदर्शिनं
कदम्बखण्डे हरिमाबभाषे ॥१०७॥

---

१. क—इति श्रीसङ्गीतमाधवो नाम दशमः सर्गः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दुःखिवराडी रागेण गीयते ॥२३॥

ते पश्यति दिशि दिशि श्यामलसुन्दर वेणुरवं क्वणयन्तम् ।
स्मर तरलं शिखिपिच्छधरं मुहुरलमालिङ्ग्य हसन्तम् ॥१॥

माधव प्राणसखी मम राधा ।

अहह विषीदति निरवधिवर्द्धितदु:सहमन्मथ बाधा ॥ध्रु.॥

क्षणमपि याति बहि: क्षणमन्त: प्रविशति कुञ्जकुटीरम् ।

उच्चाटनमपि भजति प्रिया संवृणुते न च चीरम् ॥२॥

॥ माधव प्राणसखी. ॥

हा नाथेति महाकरुणं मुहुरतिविकलं विलपन्ती ।

सिञ्चति नेत्रजलेन लतातरुनिकरं क्षितिषु लुठन्ती ॥३॥

॥ माधव प्राणसखी. ॥

क्षणमपि धावति निपतति मूर्छति विलुलितकुन्तलभारम् ।
पटमवपाट्य भनक्ति च वलयं त्रोटति मणिमयहारम् ॥४॥
॥ माधव प्राणसखी. ॥

मृगयति कामपि वल्लिमथेच्छति जमुनागमनमजस्रम् ।

गच्छ गृहं सखि तच्चरणे कुरु नतिमिति गदति च सास्रम् ॥५॥

॥ माधव प्राणसखी ॥

त्वत्पदनिविडप्रेमरसविकल[1]हृदया हन्त न जाने ।

जीवति नाथ चिरागमने मम नेति च बाधा याने ॥६॥

॥ माधव प्राणसखी. ॥

१. ख—विह्वल

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मोहननित्यमहारसदं किल युवयोर्वेद्मि स्वभावम् ।
यदि निजजीवकलां कलयिष्यसि चञ्चलचलकृतभावम् ।।७।।

।। माधव प्राणसखी. ।।

इति रसलोलसरस्वतिवर्णितराधाप्रियसखिभाषा ।
विलसति माधवजनितमहाप्लुतप्रेमोत्कण्ठविलासा ।।८।।

।। माधव प्राणसखी. ।।

रुदन्ति मृगपक्षिणो न विकसन्ति वल्लिद्रुमाः
शरद्विमलचन्द्रमा मलिनभावमालम्बते ।
वहन्ति न समीरणाः सहजशीतलामोदिनः
क्षणाद्विरहकातरे नवरसप्रदे धामनि ।।१०८।।

सहसा समुपेत्य माधवस्तत उद्वेल इवामृताम्बुधिः ।
परिरम्भणचुम्बनादिना रमणीयं रमयाम्बभूव सः ।।१०९।।

लज्जा सङ्कुचिता भृशं तरलयोर्मौनैकवृत्ति प्रिया-
लापैकोत्सुकयोः सुपत्रशयना संस्पृग्बलाकर्षिणोः ।
प्रत्याख्यानपरायणा प्रहरतो दैन्योक्तिनिष्पीडिनो
राधामाधवयोर्नवे निधुवने कोपि क्रमः पातु वः ।।११०।।

इति श्रीसङ्गीतमाधवे विह्वलराधिको नामैकादशः सर्गः ।।११।।

० ० ०

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

द्वादशः सर्गः

तत्तद्विचित्ररतिकेलिभिरुल्लसन्ती
स्मित्वा कदाचिदिति कान्तमुवाच राधा ।
आकृष्य वेणुविरुतैर्व्रजभूकिशोरी-
र्मद्दासिका विरचय प्रियरासगोष्ठ्याम् ॥१११॥

अथ गायति माधवे भुजं दयितांसे विनिधाय वेणुना ।
परमाद्भुतदर्शनोच्छलत्कुतुकेन प्रियमाह राधिका ॥११२॥

ललितरागेण गीयते ॥२४॥

न वहति सरिदपि सहजजवेन ।
स्थगति शशी दिवि निजविभवेन ॥१॥
प्रिय गानरसे तव वेणुना ॥ध्रु.॥

द्रवमयवपुरिह धृतमुपलेन ।
जनयति विस्मयमतिकठिनेन ॥२॥ प्रियगान ।

सकलभुवनमिदममृतभरेण ।
भवति भरितमिव मधुरतरेण ॥३॥ प्रियगान ॥

तव पदसरसिजकृतभवनेन ।
चलति गृहं नहि युवतिजनेन॥४॥ प्रियगान ॥

धृततृणकवलमुकुलनयनेन ।
लसति वनं तव सुरभिगणेन ॥५॥ प्रियगान ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

विसृजति कलकलमतुलरसेन ।
प्रमदखगावलिरलमलसेन ।।६।। प्रियगान ।।

स्थिरचरमिह भवति च कलनेन ।
परमसुखामृतहृदि मिलनेनं ।।७।। प्रियगान ।।
परपदरतमुनिरनुतपनेन ।
भवति कृती तव पदनयनेन ।।८।। प्रियगान ।।

मुदितसरस्वतिगीतमुखेन ।
विशतु महिम्नि हरेः स्वसुखेन ।।९।। प्रियगान ।।

अन्योन्याबद्धहस्तैरधिकृतवलयैःगोपबालाकदम्बैः
कालिन्दीये विराजत्सुविपुलपुलिने मन्दसद्गन्धवाहे ।
एकैकस्याः स एकोप्यतिचतुरतयाकण्ठसंश्लेषि बाहु-
र्मध्ये मुग्धः स राधारतिरभसपरस्तत्र रासे ननर्त्त ।।११३।।

एका गोपी राधिका सख्यहीना
भद्रा रुद्धा तत् क्षणोज्जृम्भितार्त्तिः ।
सिद्धा राधा माधवध्यानयोगा-
द्रासे दध्यौ निर्गताथैवमूचे ।।११४।।

वसन्तरागेण गीयते ।।२५।।

वादयते मणिवेणुमुदारम् ।
गलितमधुरवरनवरससारम् ।।१।।
नृत्यति हरिरिह मोहनरासे ।
रसिकयुवतिततिरचितविलासे ।।ध्रु।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

दर्शयते बहुहस्तकभेदम् ।
चलति ललितगतिचित्रमखेदम् ।।२।। नृत्यति हरि०।।

मध्यविलम्बितद्रुतपदचालम् ।
कलयति गीतपदोचिततालम् ।।३।। नृत्यति हरि०।।

रत्नखचितपटवलयकटीरम्[1] ।
भ्रमयति नवघनश्यामशरीरम् ।।४।। नृत्यति हरि०।।

सह नर्त्तकराधामुखविम्बम् ।
चुम्बति चारुरचितपरिरम्भम् ।।५।। नृत्यति हरि०।।

ललितार्पितताम्बूलखपूरम् ।
रसयति विहितप्रियामुखपूरम् ।।६।। नृत्यति हरि०।।

गीतविचित्रकलागतपारम् ।
किमपि प्रशंसति वरतनुवारम् ।।७।। नृत्यति हरि०।।

मधुरसरस्वतिगीतमुदारम् ।
गणय रसिकजनहरिरससारम् ।।८।। नृत्यति हरि०।।

हृत्वा कञ्चुकमौक्तिकं खरनखैः कस्याश्चिदुच्चस्तनं
चुम्बन् कामपि संष्वजन्नपि परां नीवीपरस्याहरन् ।
नीत्वैकामपि मण्डलाद्बहिरहो तन्वन् विचित्रां रतिं
राधासौ रतउन्मदो विजयते रासे रसज्ञो हरिः ।।११५।।

---

१. क—कठीरम्

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

ततः स्मेरमुखौ राधामाधवावभिवीक्ष्य ताः ।
प्रविश्य मण्डले तस्मिन् सहसा मज्जतां रसे ॥११६॥

स्थाणूनङ्कुरयन्महाखरसरित् स्रोतांसि संस्तम्भयन्
नाभीरीदधिमन्थनं विफलयन् ग्रावावलीं द्रावयन् ।
सिञ्चन् प्रेमरसैर्दिशः कुलवधूनीवीं च विस्रंसयन्
गोविन्दस्य कवीन्द्रविस्मयकरो वंशीरवः पातु वः ॥११७॥

इति श्रीसङ्गीतमाधवे रासविलासो नाम द्वादशः सर्गः ॥१२॥

○ ○ ○

त्रयोदशः सर्गः

तादृङ्नर्त्तनगानमत्तयुवतीसम्मण्डलान् माधवो
निष्क्रान्तः सह कान्तया द्रुतपदं दुर्गं प्रविष्टो वनम् ।
राधायाः कृपणातिमुग्धदयिता काचिन्मुदासीत्तयोः
किञ्चिद्दूरत एव वीक्ष्य ललितं धन्या निलीना त्वगात् ॥११८॥

आसीनौ क्व च कुत्रचिच्च शयितौ कुत्रापि पुष्पोच्चयं
छिन्दानौ सुरतोत्सवाय रुचिरं कुञ्जं प्रविष्टौ क्वचित् ।
अन्योन्यां सवलद्भुजौ सहसितौ यत्तौ क्वचिल्लीलया
श्रीराधामधुसूदनौ रसनिधी सा कापि धन्या त्वगात् ॥११९॥

तत्र क्षणं कीरगणेरितानि
प्रियाणि राधाचरितानि शृण्वन् ।
यदा हरिर्मीलितलोचनोभू-
त्तदैव राधा कुतुकात्तिरोधात् ॥१२०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अथोत्थितायां ललितं हसन्त्यां
लतान्तरे माधवजीवितायाम् ।
निमेषमात्रं कलयन्ननन्तं
कल्पं हरिर्व्याकुल एवमूचे ।।१२१।।

देशवराडीरागेण गीयते ।।२६।।

तव ललितकुण्डलं विधुतविधुमण्डलं चारुमुखममृतनिधिसारम् ।
स्मरति मम मानसं किमपि रतिलालसं स्पन्दिमृदुहसितमधुधारम् ।।१।।

प्रिये क्वासि राधे देहि मयि किमपि शुभदृष्टिम् ।
तव निमिषकौतुके किरति मयि दारुणो विषमशरउग्रशरवृष्टिम् ।।ध्रु.।।

स्फुरति तव लोचनं कमलमदमोचनं प्रेमरसलहरिकृतदोलम् ।
कलितनवकुन्तलं चलदलकसङ्कुलं भाति मम तदपि सुकलम् ।।२।।
।।प्रिये क्वासि.।।

देहि तव दर्शनं रक्ष मम जीवनं चन्द्रमुखि ! कलय निजदासम् ।
मयि परमकातरे प्रकृतिमृदुलातरे कल्पयसि कति न परिहासम् ।।३।।
प्रिये क्वासि. ।।

क्षणविरहदुःखतो मम भवति विक्षतो धैर्यगिरिरतनुजयकेतो ।
नवकनकचम्पकप्रकररुचिकम्पकश्रीलतनुसकलसुखहेतो ।।४।।
प्रिये क्वासि. ।।

मिलति कठिनायसे मयि परमसत्त्वशे[1] पीनजघनकठिनकुचभारे ।
विवृणु हसदाननं दीप्तनवकाननं कञ्चुतटलुलितमणिहारे ।।५।।
प्रिये क्वासि. ।।

१. ख—सावसे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मम मनसि नापरा तव तु गुणतत्परा कीरवरविततिरुपगीता ।
क्षणमरमदत्र मे हृदयमतिविभ्रमे तत्र किमनुभवविपरीता ॥६॥
प्रिये क्वासि.॥

कलय वरचन्द्रकिन् रुचिररुरुशावहे त्वं च मम मित्र भव साक्षी ।
त्यजति बत जीवनं हरिरतुलयौवनं नाद्य यदि मिलति हरिणाक्षी ॥७॥
प्रिये क्वासि.॥

इति वदति राधिका मधुपतिरसाधिका प्रादुरभवदतिमधुलीला ।
वेत्ति न सरस्वती किमपि परमं ततो बुद्धिरिह भवति शुभशीला ॥८॥
प्रिये क्वासि.॥

यद्विक्रेतुमपि क्षमासि कृपया योयं निजाङ्के कृतो
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तिषु त्वयि रतो जानाति यो नापराम् ।
सोऽहं ते मृदुलाङ्गि ! कर्कशहृदि न्यस्ताङ्घ्रिपङ्केरुहो
लोकानां च निमेषयोः क्षणमपि क्षेमाय पक्ष्मायितम् ॥१२२॥

यद्देवर्षिशुकादिमृग्यमनिशं यद्वाञ्छनीयं श्रिया
कृष्णो येन विघूर्णितः प्रियगणा माद्यन्ति मत्ता इव ।
शम्भुर्यन्मृगयन् सुखं च सकलं त्यक्त्वाऽभवद्भिक्षुको
राधामाधवयोस्तदद्भुतरसः प्रेमा चिरं पातु वः ॥१२३॥

इति श्रीसङ्गीतमाधवे विधुरमाधवो नाम त्रयोदशः सर्गः ॥१३॥

○ ○ ○

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

चतुर्दशः सर्गः

अथ विरहविहस्तास्ताः समुद्वीक्ष्य भूयः
परमदयितराधामाधवं कीर्त्तयन्त्यः[1] ।
तदतिकरुणधामात्यन्तमानन्दकन्दं
रसमयमुपलभ्य प्रेममग्ना बभूवुः ॥१२४॥

काश्चिन्मौक्तिकमाल्यकज्जलवरालङ्कारकाश्मीरजा
लेपालक्तककञ्चुकैः प्रियतमां राधां मुदाऽमण्डयन् ।
गुञ्जाहारवतंसपिच्छमुकुटस्रग्गन्धपीताम्बरै -
रन्याः साधु हरिं प्रसाध्य दयिता सन्तोषयाञ्चक्रिरे ॥१२५॥

एवं निकुञ्जनिलये मृदुलं तदानी -
मास्तार्य्य पुष्पमथ तत्र हरौ निविष्टे ।
प्राणेश्वरीं समुपवेश्य च तस्य पार्श्वे
याता बहिर्मुमुदिरे प्रिययोर्विलासैः ॥१२६॥

राधागोविन्दनिर्द्वन्द्वरसानन्दाब्धिमग्नधीः ।
सख्ये का कथयन्मोदादन्याभ्यो भारतीं वराम् ॥१२७॥

करमवलम्ब्य सखीनिवहे विनिवेश्य लतागृहकोटरे ।
नवसङ्गमभयह्रीवलिता बहिरपि याते प्रियगोचरे ॥१॥

निममज्ज सा रससागरे ।
क्रीडति व्रजनवनागरे ॥ध्रु०॥

---

१. ख—कीर्त्तयन्सः

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

पृच्छति किमपि किमपि कृतमौनां तद्वचनामृतलालसे ।
नयति बलादिव तल्पमनल्पककेलिकलाकुलमानसे ॥२॥
निममज्ज सा०॥

नवकञ्चुकमवमुच्य पृथुस्तनकृतखरनखशिखराङ्कणे ।
श्लिष्यति गाढतरं स्मरतरलिमरवकृतवरकरकङ्कने ॥३॥
निममज्ज सा०॥

पिबति तथाधरसीधुरसामृतमथ बहुविधकृतचुम्बने ।
नीविनिहितकर आकुलदयिताविहित झटित्यवलम्बने ॥४॥
निममज्ज सा०॥

मत्ताकरीन्द्रतुमुलरतिसङ्गररचितमहाद्भुतविक्रमे ।
खिद्यति मीलति प्राणसमोरसि शिशिरभावकृतविश्रमे ॥५॥
निममज्ज सा०॥

रतिरसमत्तमनोहरनागरि कामकलाकृततोषणे ।
विकसितकमलकलिन्दसुताप्लुतमन्दपवनरसपोषणे ॥६॥
निममज्ज सा०॥

स्रस्तशिखण्डमुकुटपरिखण्डितमाल्यमृदिततरचित्रके ।
तामपि भूषयति प्रणयेन सुविरचितकुङ्कुमपत्रके ॥७॥
निममज्ज सा०॥

राधापदरतिमुग्धसरस्वतिभाषितहरिरसवैभवे ।
कुरु हृदयं परभावविभावितमापतननिगमकैतवे[1] ॥८॥
निममज्ज सा०॥

१. ख—मापमति निगमकैतवे

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

न स्वादेद्यन्मतिरपि सकृन्नैव सर्वार्थसारो-
दारोराधामधुपतिपदाम्भोजमाध्वीकधाराः ।
यन्नेत्राभ्यामपि न कलिता तन्महानङ्गखेला
कुञ्जे कुञ्जे सततमिह तज्जीवितत्वं धिगस्तु ॥१२८॥

तत्वमिच्छसि चेन्मुग्धे रससिन्ध्ववगाहनम् ।
महाप्रेमरसोत्सवेनैव भज राधापदाम्बुजम् ॥१२९॥

सर्वैः प्रेमरसामृतैः सुघटिता नूनं व्रजस्त्रीघटा
सा यच्छ्रीचरणस्फुरन्नखमणिज्ज्योतिः कलांशांशका ।
यद्गोविन्दभुजान्तरे रतिकलारङ्गेण दोलायितं
तद्वस्तु श्रुतिमस्तकैरकलितं राधाभिधं पातु वः ॥१३०॥

इति श्रीसङ्गीतमाधवे राधामाधवविलासोनाम
चतुर्दशः सर्गः ॥१४॥

○ ○ ○

पञ्चदशः सर्गः

अखिलभुवनसारं प्रेमसर्वस्वभारं
नवमदनविकारं सौख्यसिन्धुप्रचारम् ।
मधुररसविहारं राधिकाकण्ठहारं
प्रणमत सुकुमारं श्रीयशोदाकुमारम् ॥१६१॥

श्रीवृन्दावनविपिनेन्द्रजीवशक्तिः
सत्प्रेमोज्ज्वलरससारकल्पवल्ली ।
सा राधा सततमहामनोजबाधा
संजीयान्मधुरवयो विलासशीला ॥१३२॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

गुर्ज्जरीरागेण गीयते ॥२८॥

प्रवहदमृतरसकृतपरिहासे ।
शिवविधिशुकनारदजनिताशे ॥१॥

राधामाधवकेलिविलासे ।
विशतु मनो मम प्रेमविकाशे ॥ध्रु ॥

वृन्दावनवनसहजनिवासे
नवरसभावितमतिप्रतिभासे ॥२॥ राधामाधव०॥

तिक्ततरीकृतमुक्तिविताने ।
हरिचरणोज्ज्वलभावनिदाने ॥३॥ राधामाधव०॥

प्रतिपदजृम्भितमदनविकारे ।
परमरसामृतसागरसारे ॥४॥ राधामाधव०॥

थूत्कृतविधिपदमुनिवरगीते ।
तुच्छति गुणजडप्रकृतिमधीते ॥५॥ राधामाधव०॥

राधाप्रियपरिजनकलनीये ।
विदितनिगमवरसंवरणीये ॥६॥ राधामाधव०॥

अन्तरहितमहदकलितपारे ।
बहुविधभङ्गिमप्रेमप्रसारे ॥७॥ राधामाधव०॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

अतिरसलोलसरस्वतिगाने ।
कुरुत हृदयमिह परमनिधाने ।।८।। राधामाधव०।।

दग्धो भीमभवाटवीभ्रमणतो दुःखौघ दावानलै-
रादाय प्रियमुग्धवृत्तिकरिणीः सद्वत्मंगो जीवितः ।
सान्द्रानन्दरसातिशीतलतरे तापत्रयोन्मूलने
राधाकेलिसुधाम्बुधौ मम मनो मत्तः करी मज्जतु ।।१३३।।

श्रीरागेण गीयते । २९।।

वृन्दारण्यचराचरवृन्दम् ।।
श्रयत महारसवैभवकन्दम् ।।१।।

गायत राधामाधवलीलाम् ।
कुरुत मतिं रसरञ्जितशीलाम् ।।ध्रु ।।

पश्यत राधाकेलिनिकुञ्जम् ।
प्रकटमहाद्भुतरतिरसपुञ्जम् ।।२।। गायत राधा०।।

चरत विकुण्ठादपि रमणीये ।
व्रजवलये शिवविधिकमनीये ।।३।। गायत राधा०।।

पुलिने पुलिने तपनसुतायाः ।
भ्रमत न यत्र प्रसरति माया ।।४।। गायत राधा०।।

परमानन्दरसाम्बुधिसारे ।
नयत मनो व्रजराजकुमारे ।।५।। गायत राधा०।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

मुञ्चत विषमविषयरसगन्धम् ।
घटयत हरिपदहृढरतिबन्धम् ।।६।। गायत राधा०।।

मृगयत राधापदरसभाजम् ।
परिचिनुतोज्ज्वलवरपदराजम् ।।७।। गायत राधा०।।

इति हितसारसरस्वतिगीतम् ।
जनयतु कञ्चनभावमधीतम् ।।८।। गायत राधा०।।

दूरान्मुञ्च वराङ्गनादिविषयान् कर्मादिमार्गे वृथा
खेदं न प्रथयेन्द्रजालसदृशीर्विद्धीह सिद्धीरपि ।
मुक्तिं तिक्ततरां च थूत्कुरु परं वृन्दावनेन्द्रं भज
श्रीराधानुचरी भवंस्तु कलयेस्तत्रापि कञ्चिद्रसम् ।।१३४।।

या पूर्वं मिलनाद्बभूव विमुखी भावादिका क्वादिका
या वा निद्रितचौरवन्मिलितयोः सध्वान्तरात्रावभूत् ।
या वृन्दावनमञ्जुकुञ्जकुहरे कृष्णान्तरङ्गेषु वा
राधामाधवयोर्विलासलहरी सा सा चिरं पातु वः ।।१३५।।

इति श्रीसङ्गीतमाधवे निजोल्लासवर्णनं नाम पञ्चदशः सर्गः ।।१५।।

अस्त्रौघैर्मकरन्दबिन्दुनिवहैर्निस्पन्दिभिः सुन्दरं
नेत्रेन्दीवरमादधत् सुपुलकोत्कम्पं च बिभ्रद्वपुः ।
वाचश्चापि सगद्गदा हरिहरीत्यानन्दिनीरुद्गिरन्
प्रेमानन्दरसोत्सवं दिशतु वो देवः शचीनन्दनः ।।१३६।।

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

तत्तद्दोषप्रबलगरलैरर्थतः शब्दतो वा
कामं नष्टां कृतिमति शुभां कुर्वतां ये द्विजिह्वाः ।
गाढं मग्नां परमरसदे राधिकाकेलिसिन्धौ
जातस्नेहाः स्तुतिभिरमृतैर्जीवयिष्यन्ति भूयः ॥१३७॥

अलङ्कुर्व्युरलङ्कारैः प्रेम्णाद्य मनः क्वचित् ।
कण्ठे कुर्वन्तु रसिकाः कृतिं मुग्धामिमां मम ॥१३८॥

श्रीराधिकामाधवयोः पदाम्बुजे
निर्माय यत्काव्यमिदं मयार्पितम् ।
तेनैव तौ प्रीतहृदौ कदापि मां
अत्यद्भुतां दर्शयतो रहःकलाम् ॥१३९॥

इति प्रेमरसाधिदेवतानुचरी बुभूषता केनापि प्रकटीकृतम् । इति श्री प्रबोधानन्दसरस्वतीगोस्वामिना विरचितं श्रीसङ्गीतमाधवनाममहाकाव्यं सम्पूर्णम्[1] । श्रीहरये नमो नमः । माघ शुक्ला ४ बु. सम्बत् १८९०

□ □ □

१. ख—इति प्रबोधानन्दसरस्वतीगीतम् ॥

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट - १

पद्यानुक्रमणिका

क्रम संख्या	पद्यांश	सर्ग	पद्य संख्या
१	अखिलभुवनसारं	१५	१३१
२	अतिमधुरविचित्र	६	६३
३	अतिरसमदवृन्दारण्य	३	३७
४	अथ कुचपरिरम्भचुम्ब	७	७७
५	अथ गायति माधवे भुजं	१२	११२
६	अथ तं प्राणसुहृदं	४	४९
७	अथ निजरसधारा	३	२९
८	अथ प्रेमरसागाध राधा	६	६८
९	अथ रसमय राधा	१	१०
१०	अथ वर्त्मनि लोकसङ्गते	५	६०
११	अथ विरहविहस्तास्ताः	१४	१२४
१२	अथ विहितविलम्बे दुर्वह	११	१०५
१३	अथ व्यरचयदुच्चकैश्चतुर	८	८३
१४	अथ श्रीगोविन्दे विकसद्	३	४१
१५	अथ सख्या पटीप्रान्त	४	५१
१६	अथ सहज विवृद्ध	३	३८
१७	अथ सा मृगसा(शा)वलोचना	२	२३
१८	अथ सा व्रजभीरुरग्रतः	२	१५

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रम संख्या	पद्यांश	सर्ग	पद्य संख्या
१९	अथाति मधुरानङ्गरङ्ग	८	९०
२०	अथापूर्णं स्वर्णच्छविभि	४	४६
२१	अथोत्तुङ्ग श्रृङ्ग निजदयित	५	५५
२२	अथोत्थितायां ललितं हसन्त्यां	१३	१२१
२३	अद्योत्तुङ्गंपयोधराग्रियुगलं	१	१४
२४	अनङ्गस्य प्राणाः किमु	३	३४
२५	अन्योन्याबद्धहस्तैरधिकृत	१२	११३
२६	अयि किमपि कुरुत्वं रक्ष	५	६१
२७	अयि सखि कति नोक्तं पूर्वं	१०	१००
२८	अये कोयं चन्द्रः स कथमिह	३	३३
२९	अलङ्कुर्युरलङ्कारैः प्रेम्णा दद्युर्मनः		१३८
३०	अस्त्रौघैर्मकरन्दबिन्दुनिवहै	—	१३६
३१	अहो मुखरनूपुरप्रकर	२	२०
३२	आसीनौ क्व च कुत्रचिच्च	१३	११९
३३	इति निगद्य सखी सुखदायिनी	१०	१०१
३४	इति बहुविध चिन्ताव्याकुलो	६	६५
३५	इत्थं प्रियस्य सुहृदो	४	५३
३६	उत्तरङ्ग महानङ्ग	१	५
३७	उत्तिष्ठ मा कुरु शुचं	४	५२
३८	एकदा विरचिताङ्कुताक्रमं	९	९३
३९	एका गोपी राधिका सख्यहीना	१२	११४
४०	एवं निकुञ्जनिलये मृदुलं	१४	१२६
४१	कटाक्षानाक्षिप्ताः कृतमपि	९	९५
४२	कथं घनरसप्रदो नवलतां	५	५८
४३	कथय सखि यशोदानन्दनं	६	६९

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रम संख्या	पद्यांश	सर्ग	पद्य संख्या
४४	कदाचित् कालिन्दीजल	८	८४
४५	कदाचित् श्रीराधा नव	४	४४
४६	कर्ह्याकस्मिक उद्भविष्यति	७	८०
४७	काश्चिन्मौक्तिकमाल्यकज्जल	१४	१२५
४८	कुवलयदलनील:	१	१३
४९	कृता दृष्टि: क्रूरा	९	९४
५०	कृत्वाथ तस्या: परिसान्त्वनं	११	१०७
५१	कोय द्वारि विधु: प्रियालि	६	७२
५२	क्वचन नव निकुञ्जे कृष्ण	८	८६
५३	गता दूरे गावो दिनमपि	४	५०
५४	गतायां राधायां द्रुतपदमपि	७	७३
५५	गोविन्दप्राणसर्वस्व	२	२६
५६	चेत: कामपि कुन्दसुन्दरसुधा	२	२७
५७	जय जय सुखधाम श्याम	३	३९
५८	तत: कमलपत्राक्ष:	७	७८
५९	तत: स्मेरमुखी राधा	१२	११६
६०	ततो मन्दस्पन्दं नवजलद	४	४८
६१	ततो रूपलावण्यसीमां	४	४७
६२	तत्तद्दोष प्रवलगरलैरर्थत:	—	१३७
६३	तत्तद्विचित्ररतिकेलिभि	१२	१११
६४	तत्त्वमिच्छसि चेन्मुग्धे	१४	१२९
६५	तत्र क्षणं कीरगणेरितानि	१३	१२०
६६	तदारभ्य क्षुभ्यत् हृदयमति	५	५६
६७	तदाश्चर्यं प्राणाधिकदयितयो:	२	२१
६८	तादृङ्नर्तनगानमत्तयुवती	१३	११८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रम संख्या	पद्यांश	सर्ग	पद्य संख्या
६९	त्रससि किमु सखि त्वं	६	७१
७०	दग्धो भीम भवाटवी भ्रमणतो	१५	१३३
७१	दन्ते करोमि तृणकं	१०	९९
७२	दूरान्मुञ्च वराङ्गनादि	१५	१३४
७३	द्विधाभूतमिव प्राण	३	३५
७४	न चन्द्रे निस्तन्द्रे न च परम	७	७४
७५	नवचम्पक गौरकान्तिभिः	१	२
७६	नव निभृतनिकुञ्जं सोथ	१०	१०३
७७	नवपरिमलमल्ली	३	३०
७८	नवयुवतिसुवेशं कारयित्वा	८	८७
७९	नवरसमदघूर्णन्	२	२५
८०	न स्वादेद्यन्मतिरपि सकृन्नैव	१४	१२८
८१	नहि नृपति भयं मे नो	६	६७
८२	नामैवोत्तरलं करोति परमो	१०	१०४
८३	निखिलनिगमदूरं	२	१७
८४	नित्योन्मदानन्दरसैक	१	७
८५	परमरतिरसाम्भो	१	४
८६	परमरसविभूते	१	६
८७	पाणिभ्यां पिदधत्कदापि सुदृशः	८	९१
८८	पुरो राधा पश्चादपि च मम	७	७९
८९	पुरः स्थित्वैकान्ते रचितमथ	८	८५
९०	प्रथम मुरलिरन्ध्रे	२	१८
९१	प्रसूनचयनच्छलादथ	४	४५
९२	प्राणास्तवैव वपुषा सह	५	५७
९३	बहिः किं निर्य्यादथ न	६	६४

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रम संख्या	पद्यांश	सर्ग	पद्य संख्या
९४	बाले विलोकय किशोर	३	३१
९५	भूयो भूयः सुरतसुधया	१०	९७
९६	मज्जस्तत्कुचकुङ्कुमाङ्क	५	६२
९७	मधुरं मधुरं मधुद्विष	१	१२
९८	महाप्रीतिरसानन्द	३	३६
९९	महाप्रेमरसज्योति	१	३
१००	महारसैकाम्बुधि	३	४०
१०१	मुक्ता दामनिन प्रसारय	२	२८
१०२	यदि त्वमिन्दीवर सुन्दराक्षि !	२	२२
१०३	यद्विक्रेतुमपि क्षमासि कृपया	१३	१२२
१०४	यद्द्वर्षि शुकादि मृग्यमनिशं	१३	१२३
१०५	या पूर्वं मिलनाद्बभूव विमुखी	१५	१३५
१०६	योगीन्द्रा मृगयन्ति यत्पद	७	८२
१०७	राधागोविन्दनिर्द्वन्द्वरसानन्दा	१४	१२७
१०८	राधायाः कुचमण्डले	३	४२
१०९	राधाया स्तनहेमकुम्भयुगले	१	११
११०	राधा राधेत्य सकृदधुनैव	१०	१०२
१११	राधेहं ललिता गतास्मि कपटा	८	९२
११२	रुदन्ति मृगपक्षिणो न विकसन्ति	११	१०८
११३	लज्जा सङ्कुचिता भृशं तरलयो	११	११०
११४	लोलत्पल्लविनीं विलोक्य	७	७५
११५	वक्षोजं स्तबके मुखं हिमकरे	७	७६
११६	वदन्तु वः प्राणधनं किशोर	२	१६
११७	वद बहुतररूक्षां पश्य	६	६६
११८	वितत्यनिजमुज्ज्वलं कपिश	८	८८

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रम संख्या	पद्यांश	सर्ग	पद्य संख्या
११९	विद्धं तीक्ष्ण शिलीमुखै	४	५४
१२०	विना प्राणान् देहः कथमिह	७	८१
१२१	व्रजनृपतिकुमारे कोटि	५	५९
१२२	शोभासिन्दूरविन्दोः क्वचन	३	३२
१२३	श्रवणेन निपीय राधिका	६	७०
१२४	श्रीराधिकामाधवयोः पदाम्बुजे'	—	१३९
१२५	श्रीवृन्दावन विपिनेन्द्रजीवशक्तिः	१५	१३५
१२६	श्रुत्वा राधामधुपति	२	१९
१२७	सख्या च नीता गुरुमध्यतोपि	११	१०६
१२८	सख्या तत्र पुरस्थितां कुलवधू	८	८९
१२९	सदानन्दे वृन्दावन निविडकुञ्जे	१	१
१३०	सर्वैः प्रेमरसामृतै सुघटिता	१४	१३०
१३१	सहजाद्भुत सत्प्रभावतः	१	९
१३२	सहसा समुपेत्य माधवस्तत	११	१०९
१३३	सानन्दं परिचुम्बितुं हरि हरि	९	९६
१३४	सान्द्रप्रेमरसामृतैक	१	८
१३५	सापि श्रुत्वा तमथविकला	१०	९८
१३६	सुभग शिखरलक्ष्मी	२	२४
१३७	सैवं सार्वदिके निवेद्य	४	४३
१३८	स्थाणूनंकुरयन्महाखरसरित्	१२	११७
०३९	हृत्वा कञ्चुकमौक्तिकं खरनखैः	१२	११५

○ ○ ○

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट - २

गीत्यनुक्रमणिका

क्रम संख्या	गीत्यंश	राग	सर्ग	गीति संख्या
१	अद्भुतसुरभिसमयसहजोदय	बसन्त	१	१
२	अभिमतमनुप्रतिकूलकचरिता	भैरव	२	५
३	उदयति शीतलकरे वररामा	देशाख्य	१०	२२
४	करमवलम्ब्य सखी निवहे विनिवेश्य	विभास	१४	२७
५	क्वापि गतेऽखिलगृहजन एकल ईदृशि	मालवगोडा	९	२०
६	तव ललितकुण्डलं विधुत विधुमण्डलं	देशवराडी	१३	२६
७	ते पश्यति दिशि दिशि श्यामलसुन्दरवेणुरवं	दुःखिवराडी	११	२३
८	दिशि दिश खिद्यलमतिमदविह्वलमवलोकय	दुःखिवराडी	१०	२१
९	देहि विवृत्य कृपामृतदृष्टिम्	श्यामगुर्ज्जरी	६	१४
१०	न वहति सरिदपि सहजजवेन	ललित	१२	२४
११	निपतति चरणे गुञ्जाभरणे गोकुलराजकुमारे	गुर्ज्जरी	६	१६
१२	नीलजलदरुचिरुचिरकलेवर	गुर्ज्जरी	२	४
१३	नीलनलिनदलकोमलमुज्ज्वलमङ्गमधिक	रामकिरी	८	१८
१४	प्रणत सकलसुखदायक व्रजनायक	मङ्गलगुर्ज्जरी	१	२
१५	प्रवहदगृतरसकृतपरिहासे	गुर्ज्जरी	१५	२८
१६	भुवनविदितपरिशुद्धकुलद्वयमण्वपि	मालवगोडा	६	१५
१७	मणिमयवेणुमुदक्षिपदथ मम नव	श्यामगुर्ज्जरी	८	१९
१८	मदशिखिपिच्छमुकुटपरिलाञ्छित	श्रीबसन्त	१	३

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

क्रम संख्या	गीत्यंश	राग	सर्ग	गीति संख्या
१९	मृगमदलिप्तरुचिरवपुषापरिरञ्जित	मालवगोडा	३	७
२०	वरसीमन्तरसामृतसरणि	बसन्त	२	६
२१	वादयते मणिवेणुमुदारम्	बसन्त	१२	२५
२२	विनिवेदित बहुदु:खभरेणनिरुत्तर	कर्णाट	५	१२
२३	वृन्दारण्यचराचरवृन्दम्	श्री	१५	२९
२४	वृन्दारण्यपुरन्दरसुन्दरकुन्दकलिद्विजवृन्द	सौराष्ट्री पहाडी	३	९
२५	शिक्षय मामनुपमनिजकलिपत	रामकेरी	३	८
२६	श्रुतिकुहरेविनिधातुमतिस्पृहममृतमयं	श्यामगुर्ज्जरी	४	१०
२७	सन्ततमभिलाषककमलादिकसकल	गुर्ज्जरी	५	१३
२८	समभिलषाम्यहमीक्षितुमुज्ज्वलश्रीमुख	श्री	७	१७
२९	स्तबकयुगमुन्नतं वहति रससंभृतं	देशीवराडी	४	११

o o o

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

परिशिष्ट - ३

अनुष्टुभ् — श्लोके षष्ठं गुरुज्ञेयं सर्वत्र लघु पञ्चमम् ।
द्विचतुष्पादयोर्ह्रस्वं सप्तमं दीर्घमन्ययोः ।।
३, ५, २६, ३५, ३६, ४९, ५१, ६८, ७८, ९०, ११६, १२७, १२९, १३८

इन्द्रवज्रा — स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः ।
७

उपजाति — स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः,
उपेन्द्रवज्रा जतजास्ततो गौ ।
अनन्तरोदीरितलक्ष्मभाजौ पादौ यदीयावुपजातयस्ताः ।
इत्थं किलान्यास्वपि मिश्रितासु वदन्ति जातिष्विदमेव नाम ।।
१६, २२, ४०, १०६, १०७, १२०, १२१

रथोद्धता — रात्परैर्नरलगै रथोद्धता ।
९३

शालिनी — मात्तौ गौ चेच्छालिनी वेदलोकैः ।
११४

इन्द्रवंशा — तच्चेन्द्रवंशा प्रथमाक्षरे गुरौ ।
१३९

द्रुतविलम्बित — द्रुतविलम्बितमाह नभौ भरौ ।
१०१

भुजङ्गप्रयात — भुजङ्गप्रयातं चतुर्भिर्यकारैः ।
४७

प्रहर्षिणी — त्र्याशाभिर्मनजरगाः प्रहर्षिणीयम् ।
१३२

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

वसन्ततिलका — उक्ता वसन्ततिलका तभजा जगौ गः ।
३१, ५२, ५३, ५७, ९९, १११, १२६

मालिनी — ननमयययुतेयं मालिनी भोगिलोकैः ।
४, ६, १०, १३, १७, १८, २४, २५, २९, ३०, ३७, ३८, ३९, ५९, ६१, ६३, ६५, ६६, ६७, ६९, ७१, ८६, ८७, १००, १०३, १०५, १२४, १३१

पृथ्वी — जसौ जसयला वसुग्रहयतिश्च पृथ्वी गुरुः ।
२०, ४५, ५८, ८३, ८८, १०८

मन्दाक्रान्ता — मन्दाक्रान्ताम्बुधिरसनगैर्मो भनौ तौ गयुग्मम् ।
१९, ९७, ९८, १०२, १२८, १३७

शिखरिणी — रसै रुद्रैश्छिन्ना यमनसभला गः शिखरिणी ।
१, २१, ३३, ३४, ४१, ४४, ४६, ४८, ५०, ५५, ५६, ६४, ७३, ७४, ७९, ८१, ८४, ८५, ९४, ९५

शार्दूलविक्रीडित — सूर्याश्वैर्यदि मः सजौ सततगाः शार्दूलविक्रीडितम् ।
८, ११, १४, २७, २८, ४२, ४३, ५४, ६२, ७२, ७५, ७६, ८०, ८२, ८९, ९१, ९२, ९६, १०४, ११०, ११५, ११७, ११८, ११९, १२२, १२३, १२५, १३०, १३३, १३४, १३५, १३६

स्रग्धरा — म्रभ्नैर्यानां त्रयेण त्रिमुनियतियुता स्रग्धरा कीर्तितेयम् ।
३२, ११३,

पुष्पिताग्रा — अयुजि नयुगरेफतो यकारो युजि तु नजौ जरगाश्च पुष्पिताग्रा ।
७७

वियोगिनी — विषमे ससजा गुरुः समे सभरा लोऽथ गुरुर्वियोगिनी ।
२, ९, १२, १५, २३, ६०, ७०, १०९, ११२

○ ○ ○

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi

CC0. In Public Domain, Digitizagtion by eGangotri

Dr. Urmila Sharma Collection, Varanasi